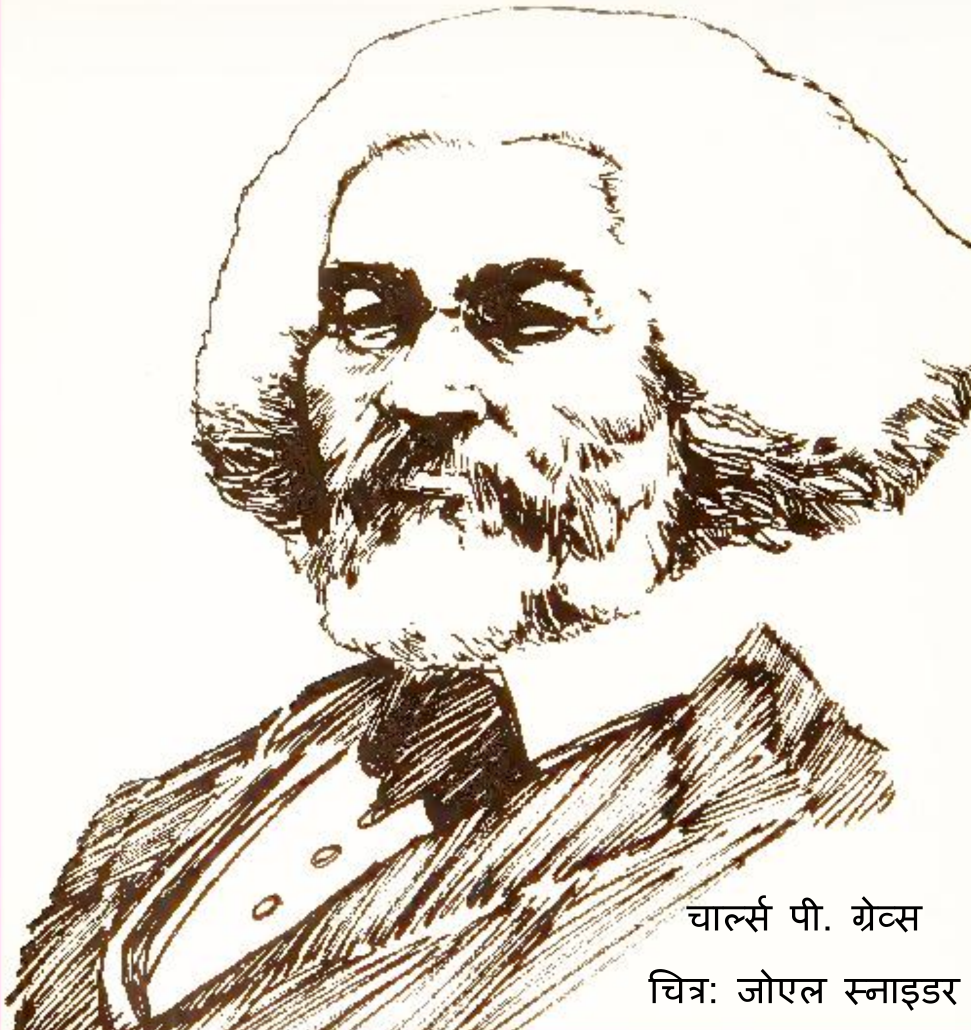
फ्रेडरिक डगलस



चार्ल्स पी. ग्रेव्स

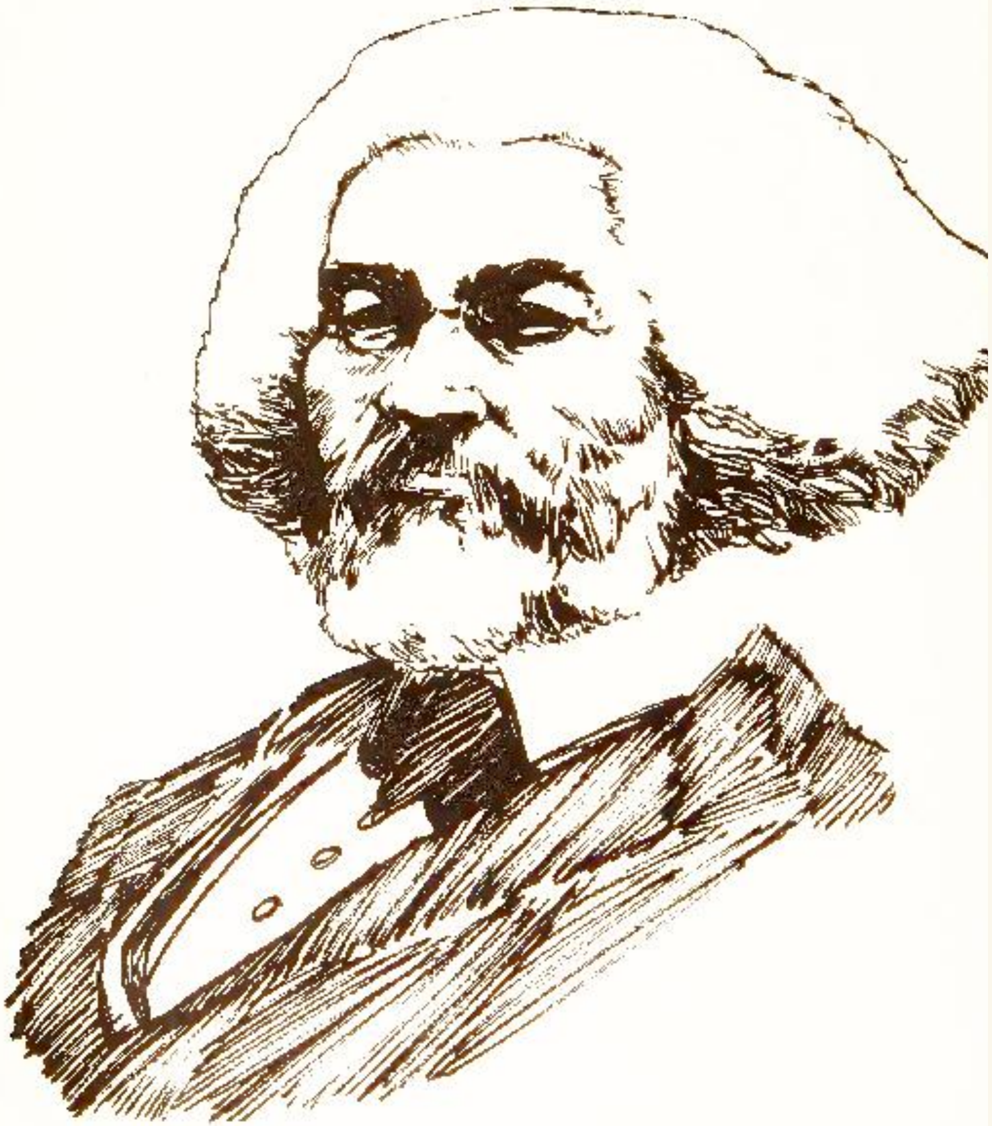
चित्र: जोएल स्नाइडर

फ्रेडरिक डगलस

पुस्तक के बारे में

जब फ्रेडरिक डगलस छोटे थे, तो उन्हें "गुलाम" शब्द का अर्थ तक नहीं पता था. फिर एक दिन उनकी दादी उन्हें ओल्ड मास्टर के पास ले गईं, जो फ्रेड की माँ और कई अन्य गुलामों का मालिक था. फ्रेड को कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी और अक्सर ठंड और भूख लगती थी. उन्हें पता चला कि गुलामी गलत थी.

फ्रेड ने खुद पढ़ना-लिखना सीखा. फिर वह उत्तर की ओर भाग गए और एक स्वतंत्र व्यक्ति बन गए. लेकिन उन्होंने अपने उन लोगों को नहीं भुलाया, जो अभी भी गुलाम थे. अपना शेष जीवन, उन्होंने दूसरों को स्वतंत्रता और बेहतर जीवन पाने में मदद की. फ्रेडरिक डगलस अश्वेत लोगों और सभी अमरीकी देशवासियों के लिए एक महान नायक थे.



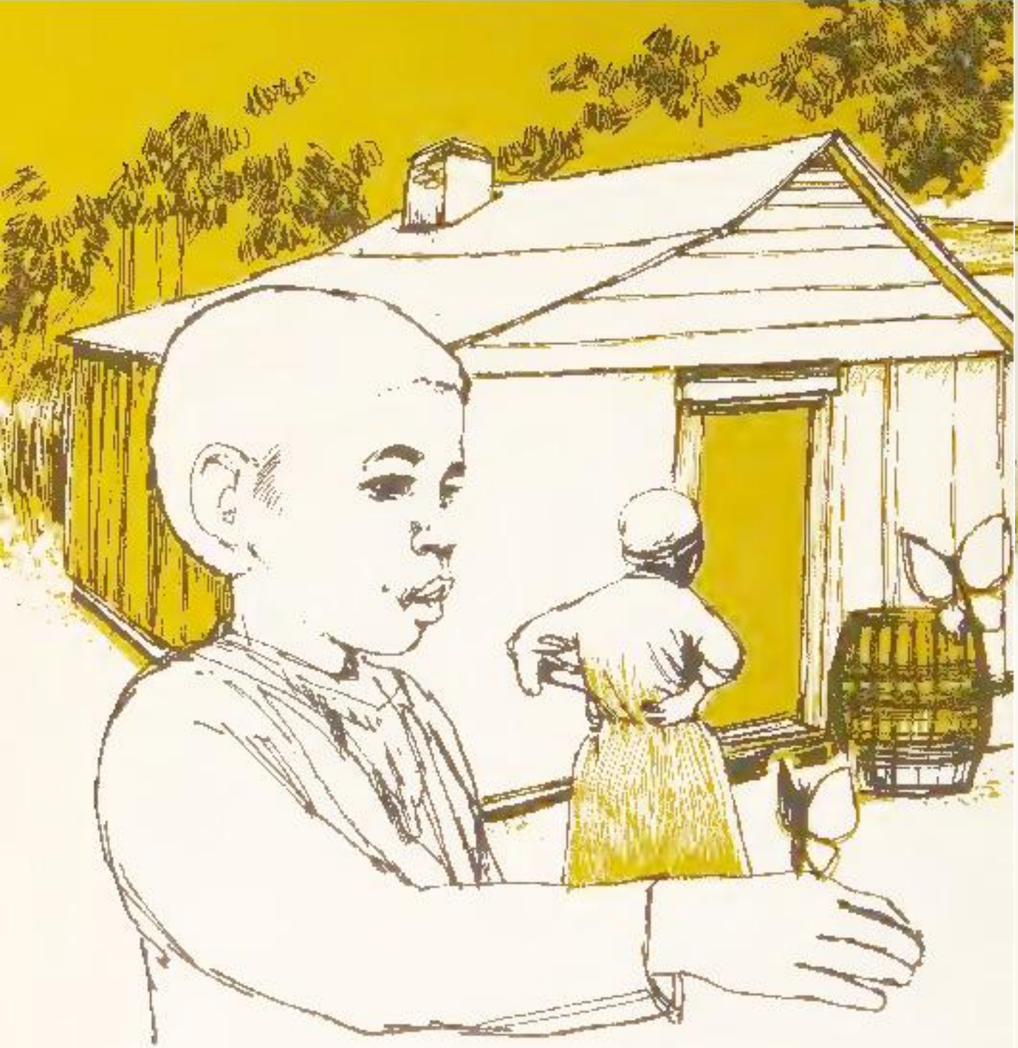
फ्रेडरिक डगलस

चार्ल्स पी. ग्रेव्स

चित्र: जोएल स्नाइडर



फ्रेड तालाब के किनारे मछली पकड़ रहा था. उसने कोई मछली नहीं पकड़ी थी, लेकिन उसे उसका कोई गम नहीं था. गर्मियों की धूप में अपने नंगे भूरे पैरों को ठंडे पानी में आराम देते हुए बैठना कितना मज़ेदार था.



फ्रेड अपने दादा-दादी के साथ पूर्वी मैरीलैंड में रहता था. वे सभी गुलाम थे. वे एक बड़े खेत के किनारे एक झोपड़ी में रहते थे.



फ्रेड की माँ भी एक गुलाम थी. माँ को कई मील दूर एक खेत में दिन भर काम करना पड़ता था. उसे अपने बेटे से मिलने का कभी समय नहीं मिलता था. फ्रेड अपनी माँ को मुश्किल से ही जानता था. और वह अपने पिता को तो बिल्कुल नहीं जानता था. फ्रेड बस इतना जानता था कि उसका जन्म 1817 में हुआ था और उसका पूरा नाम फ्रेडरिक ऑगस्टस वाशिंगटन बेली था.

फ्रेड जिस झोपड़ी में रहता था, उसमें कोई खिड़कियाँ नहीं थीं. फर्श मिट्टी का बना था. लेकिन फ्रेड को वह एक महल जैसा लगता था. उसकी दादी उस पर मेहरबान थीं, और उससे वह खुश रहता था.

जब फ्रेड छोटा था, तो उसके लिए "गुलाम" शब्द का कोई मतलब नहीं था. लेकिन एक दिन उसे पता चला कि वह झोपड़ी उसके दादा-दादी की नहीं थी. वह एक ऐसे आदमी की थी जिसे वे ओल्ड मास्टर कहते थे.



बूढ़ा मालिक फ्रेड के दादा-दादी, उसकी माँ और फ्रेड का भी मालिक था. गुलामों के पास अपने कोई अधिकार नहीं थे.

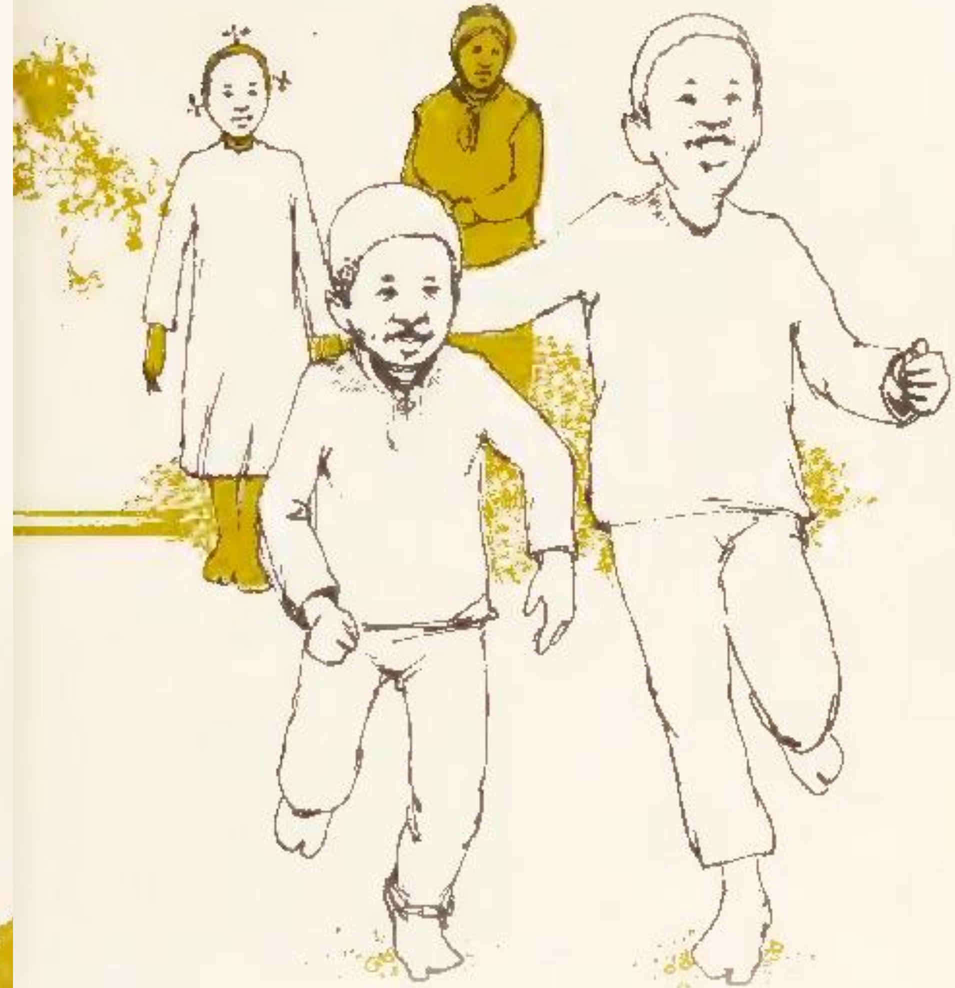


फ्रेड ने बूढ़े मालिक को कभी नहीं देखा था, क्योंकि वह बारह मील दूर एक बड़े घर में रहता था. फ्रेड की दादी ने कहा था कि जब वह बड़ा हो जाएगा तो उसे भी बूढ़े मालिक के लिए काम करना होगा. फ्रेड की इच्छा थी कि वह जीवन भर छोटा ही रहे.

एक सुबह जब फ्रेड छह साल का था, उसकी दादी ने उसे जल्दी जगा दिया. दादी ने उसे बताया कि वे एक यात्रा पर जा रहे थे. मीलों-मील वे जंगल में चले. कभी-कभी फ्रेड की दादी उसे गोद में उठा लेतीं.

आखिरकार, वे एक बड़े घर में पहुँचे. वह बूढ़े मालिक का घर था.





जब फ्रेड और उसकी दादी ने घर तैयार किया, तो कई गुलाम बच्चे दौड़कर उनके पास आए. "जाओ बच्चों के साथ खेलो." उसकी दादी ने फ्रेड से कहा.



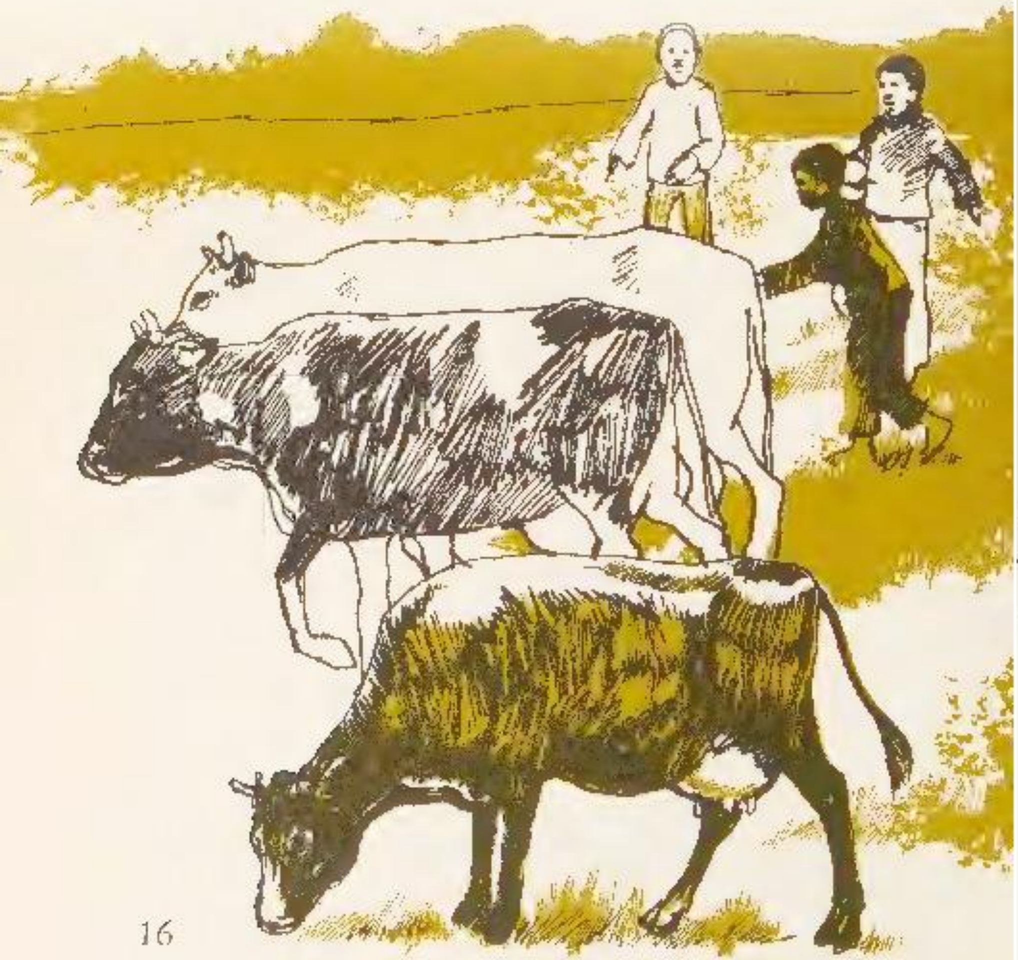
बच्चे फ्रेड को घर के पीछे ले गए. लेकिन फ्रेड खेलने को तैयार नहीं था. वो बहुत चिंतित था. क्या अब उसका लिए बूढ़े मालिक के लिए काम करने का समय आ गया था?

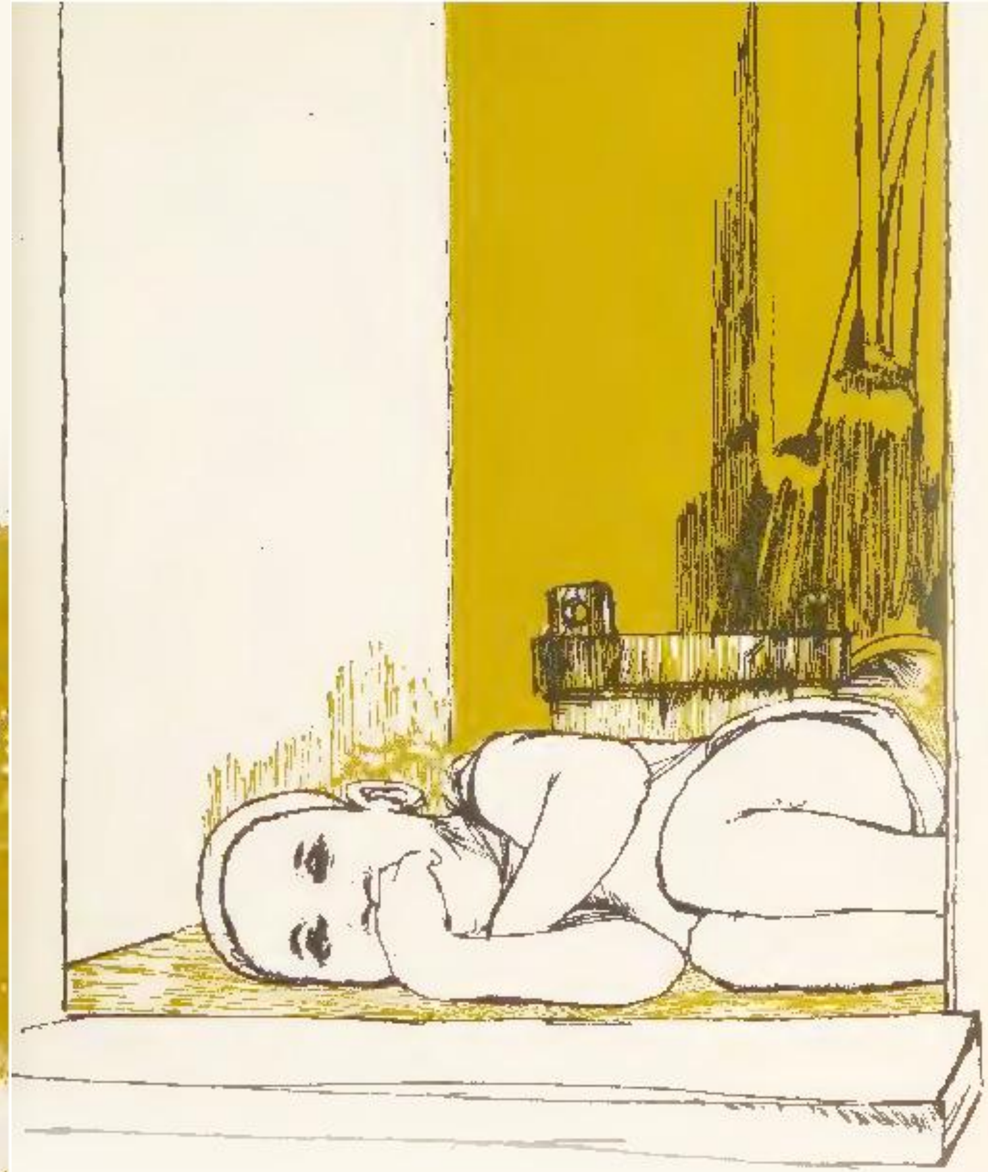
अचानक एक बच्चे ने कहा, "फ्रेड, तुम्हारी दादी चल बसी हैं."

फ्रेड ज़मीन पर गिर पड़ा और सिसकने लगा. उस रात वह रोते-रोते सो गया. गुलामी ने उससे उसकी दादी छीन ली थी.



अगले दिन फ्रेड को काम पर लगा दिया गया. वह और उसके जैसे दूसरे जवान गुलाम लड़के, गायों को चरागाह ले जाते और लाते थे. वे आँगन की सफाई करते और बूढ़े मालिक की विवाहित बेटी, मिसेज़ थॉमस औल्ड के लिए काम निपटाते.



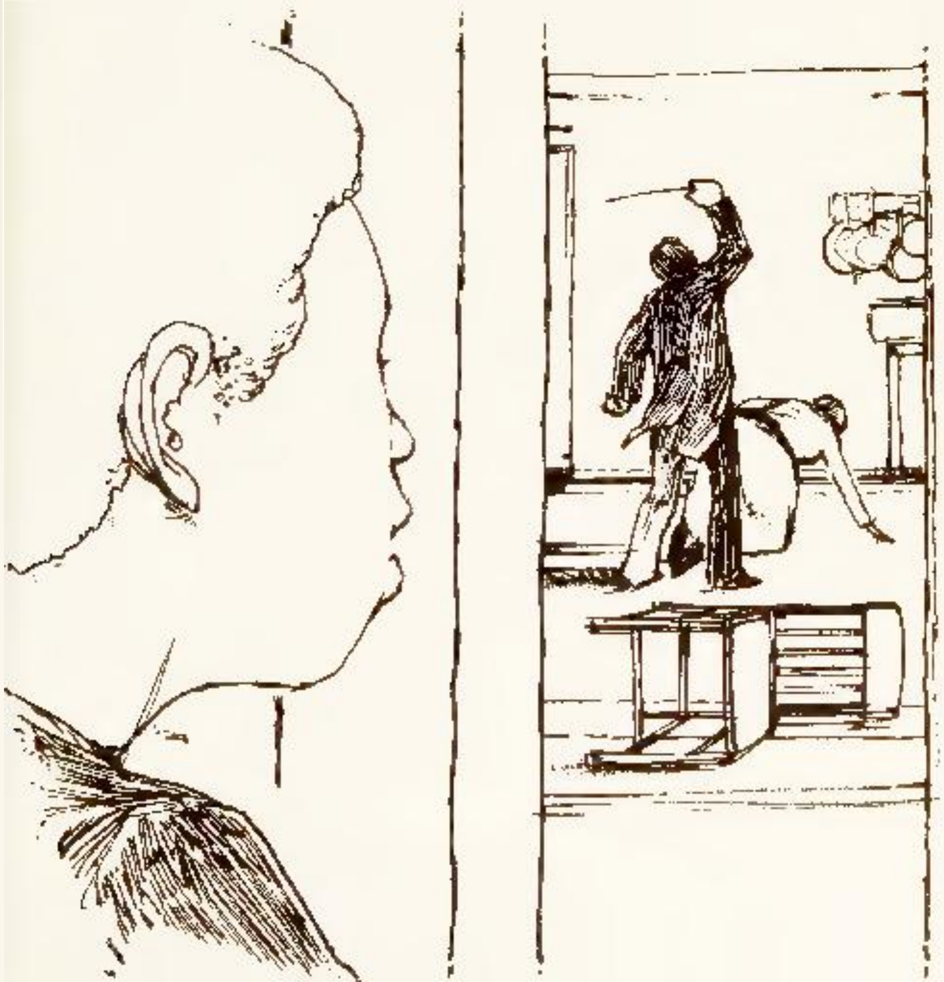


रात में फ्रेड रसोई की अलमारी में सोता था. उसके पास कंबल नहीं थे, और जब मौसम ठंडा होता, तो वह लगभग ठंड से जम जाता था.



बूढ़े मालिक की रसोइया, आंटी कैटी नाम की एक गुलाम, फ्रेड और दूसरे बच्चों की देखभाल करती थी. वह फ्रेड को पसंद नहीं करती थी. कभी-कभी वह उसे बिना खाना दिए ही रहने देती थी. फिर फ्रेड को कुत्ते के खाने के टुकड़े चुराने पड़ते थे. नहीं तो वह भूखा मर जाता.

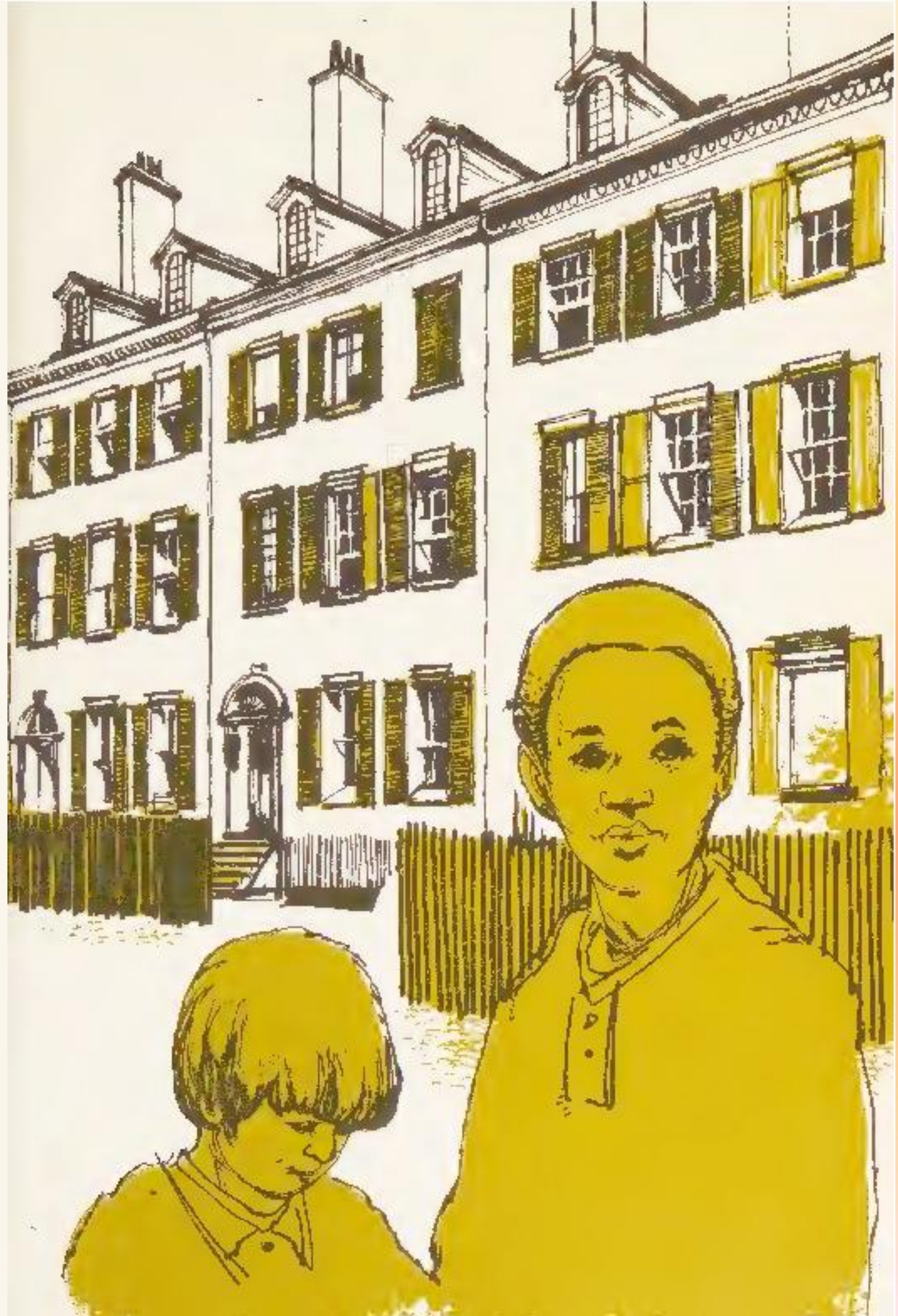
फ्रेड को गुलामी से नफ़रत थी. एक सुबह-सुबह एक जवान औरत के रोने की आवाज़ से उसकी नींद खुल गई. उसने अपनी अलमारी के दरवाज़े की दरारों में से झाँका. बूढ़ा मालिक उस औरत को चमड़े के कोड़े से पीट रहा था. औरत की पीठ पर लगे घावों से खून बह रहा था.

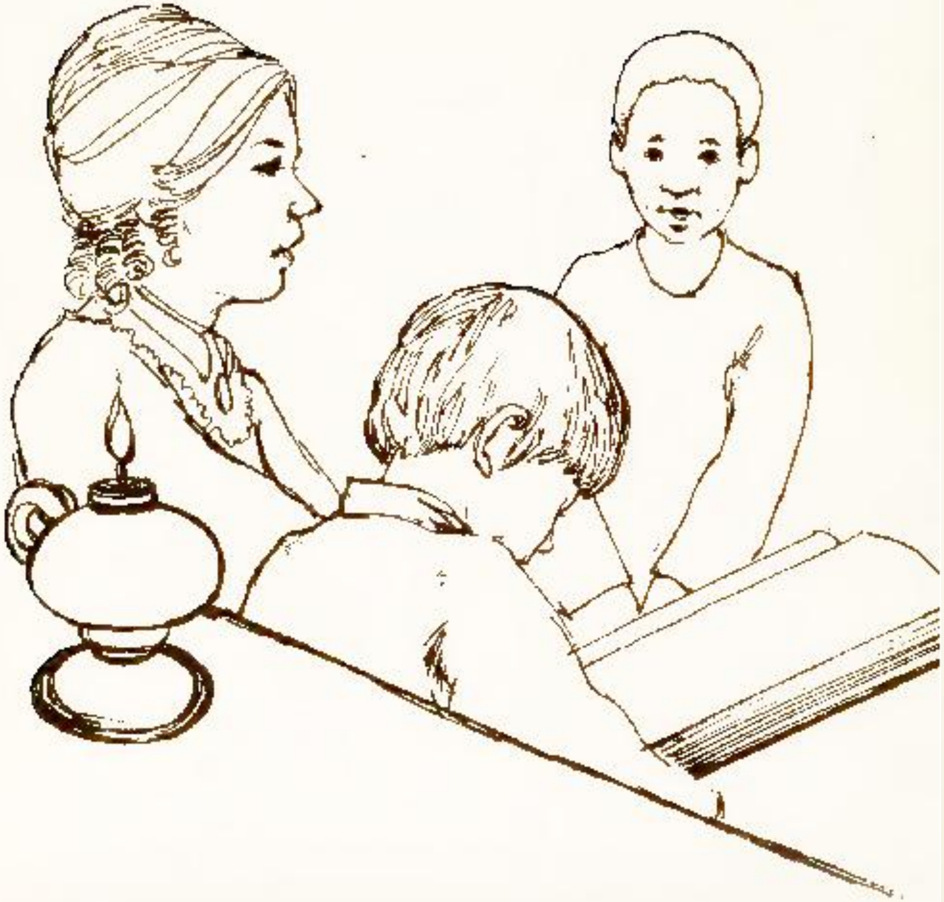


बूढ़े मालिक ने कहा कि ईश्वर ने अश्वेत लोगों को गुलाम बनाने के लिए ही बनाया था. फ्रेड को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ.

फिर उसे पता चला कि सभी अश्वेत लोग गुलाम नहीं थे. उनमें से कई आज़ाद थे. खेत के दो गुलाम उत्तर की ओर भाग गए थे. उत्तरी राज्यों में गुलामी की अनुमति नहीं थी. दक्षिण में कुछ नीग्रो, आज़ाद थे. उन्हें आज़ादी उन गोरे लोगों ने दी थी जो मानते थे कि गुलामी गलत थी. फ्रेड भी आज़ाद होना चाहता था.

जब फ्रेड नौ साल का हुआ, तो उसके मालिक ने उसे बाल्टीमोर भेज दिया. वहां पर वो मिस्टर थॉमस औल्ड के भाई, ह्यू और उनकी पत्नी के लिए काम करता था. उनका बेटा, टॉमी, कुछ ही साल का था. फ्रेड का काम टॉमी की देखभाल करना था.





शुरू में, फ्रेड बाल्टीमोर में खुश था. वह टॉमी को पसंद करता था और मिसेज़ औल्ड उसके प्रति दयालु थीं. वह अक्सर फ्रेड और टॉमी को बाइबल पढ़कर सुनाया करती थीं.

फ्रेड ने सोचा कि पढ़ना कितना अद्भुत होगा. उसने मिसेज़ औल्ड से पूछा कि क्या वह उसे पढ़ाएँगी. मिसेज़ औल्ड मान गईं.

फ्रेड ने जल्दी ही बहुत कुछ सीख लिया. जल्द ही उसे वर्णमाला आ गई और अब वह कई छोटे शब्दों की वर्तनी भी बता सकता था. उसे खुद पर गर्व था.



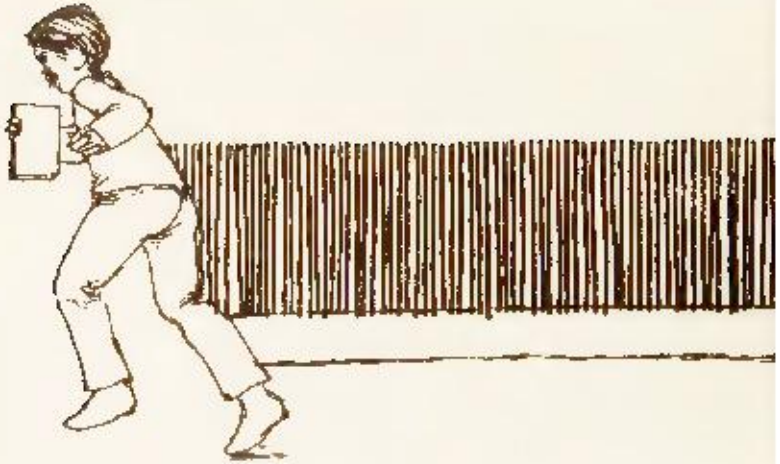


एक रात मिसेज़ औल्ड ने अपने पति को बताया कि वह फ्रेड को पढ़ना सिखा रही हैं. यह सुन मिस्टर औल्ड बहुत नाराज़ हुए. उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि किसी गुलाम को पढ़ना-लिखना सिखाना, कानून के विरुद्ध था.

"पढ़ाई दुनिया के सबसे अच्छे गुलाम को भी बिगाड़ देगी," उन्होंने आगे कहा. 'अगर तुम उसे पढ़ना सिखाओगे, तो वह लिखना सीखना चाहेगा, और फिर वो भाग जाएगा.'



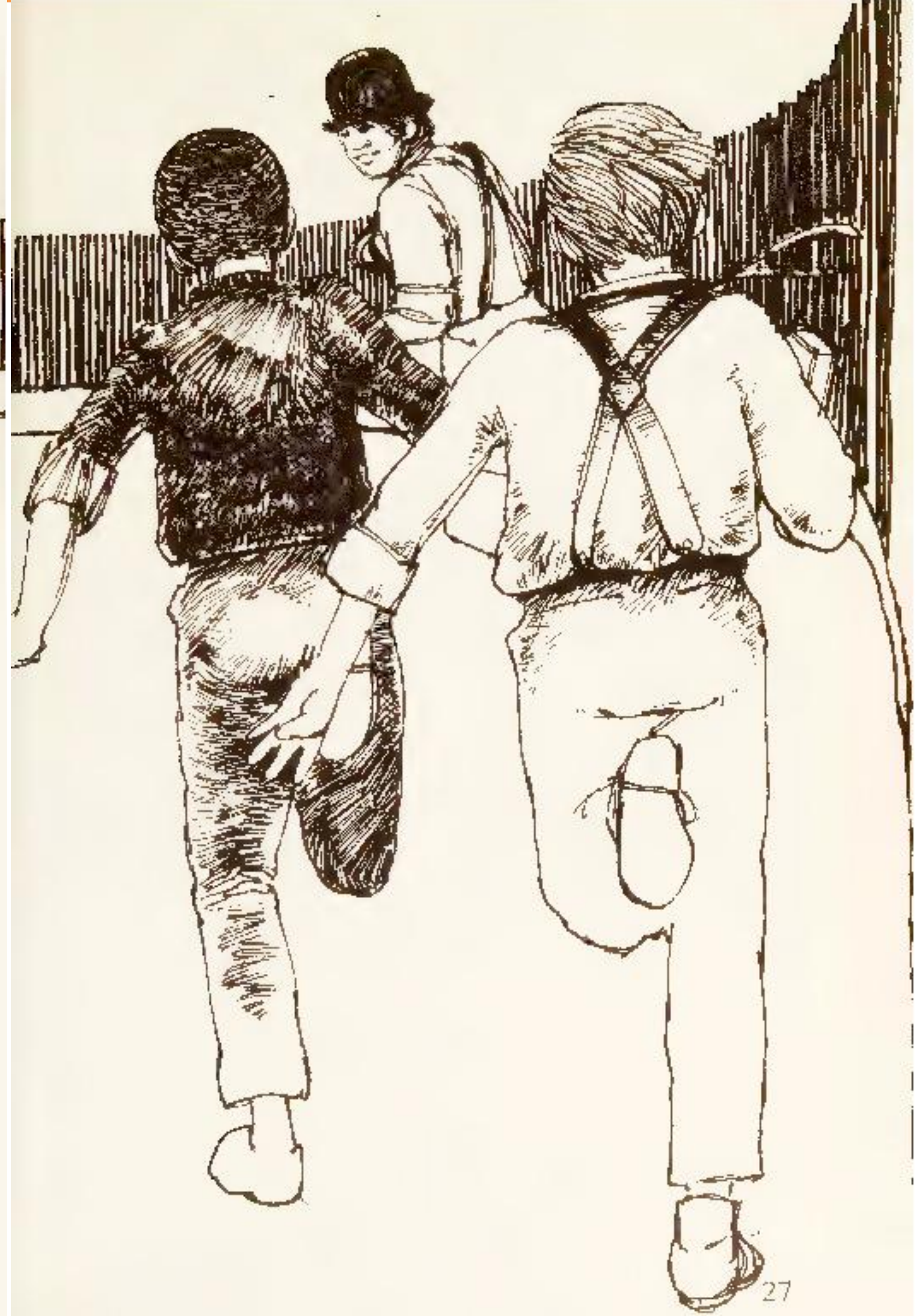
फ्रेड ने मिस्टर औल्ड की हर बात सुनी. उसे लगा कि पढ़ना सीखना, आज़ादी की ओर पहला कदम था. अब वह पहले से कहीं ज़्यादा पढ़ना सीखना चाहता था.



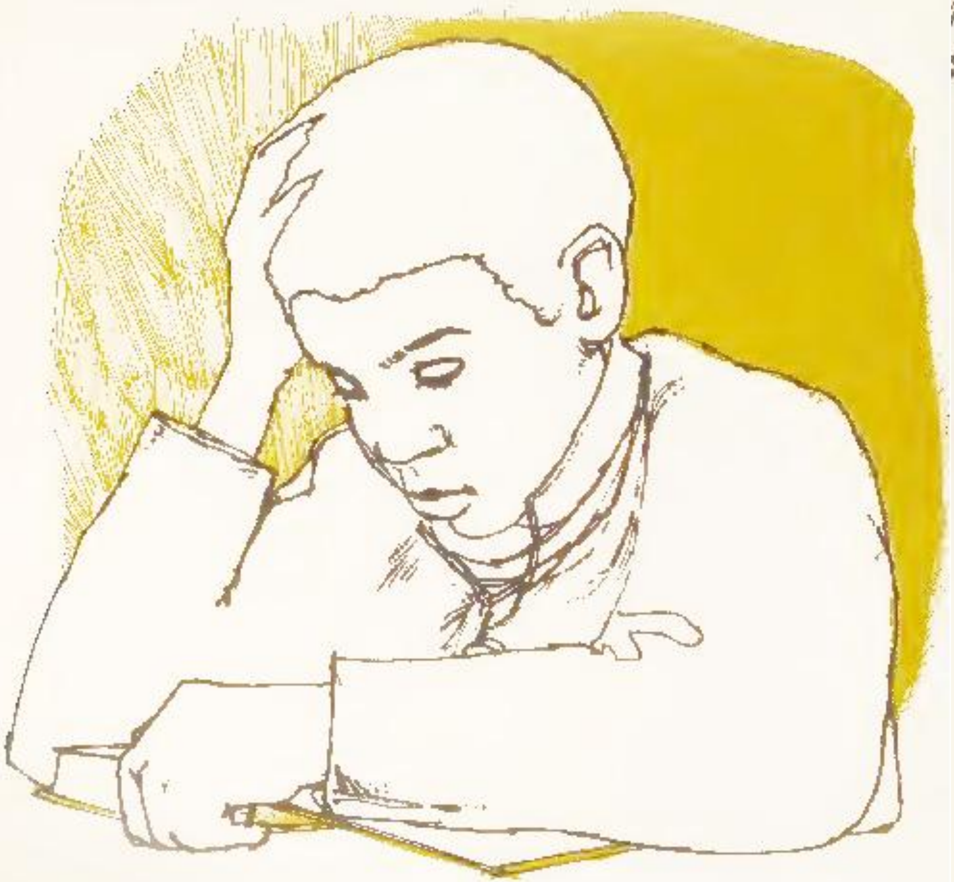
फ्रेड पुराने अखबार जमा करता था और उन्हें पढ़ने की कोशिश करता था. लेकिन जब भी मिसेज़ औल्ड उसे अखबार के साथ पातीं, तो वह उससे छीन लेतीं.

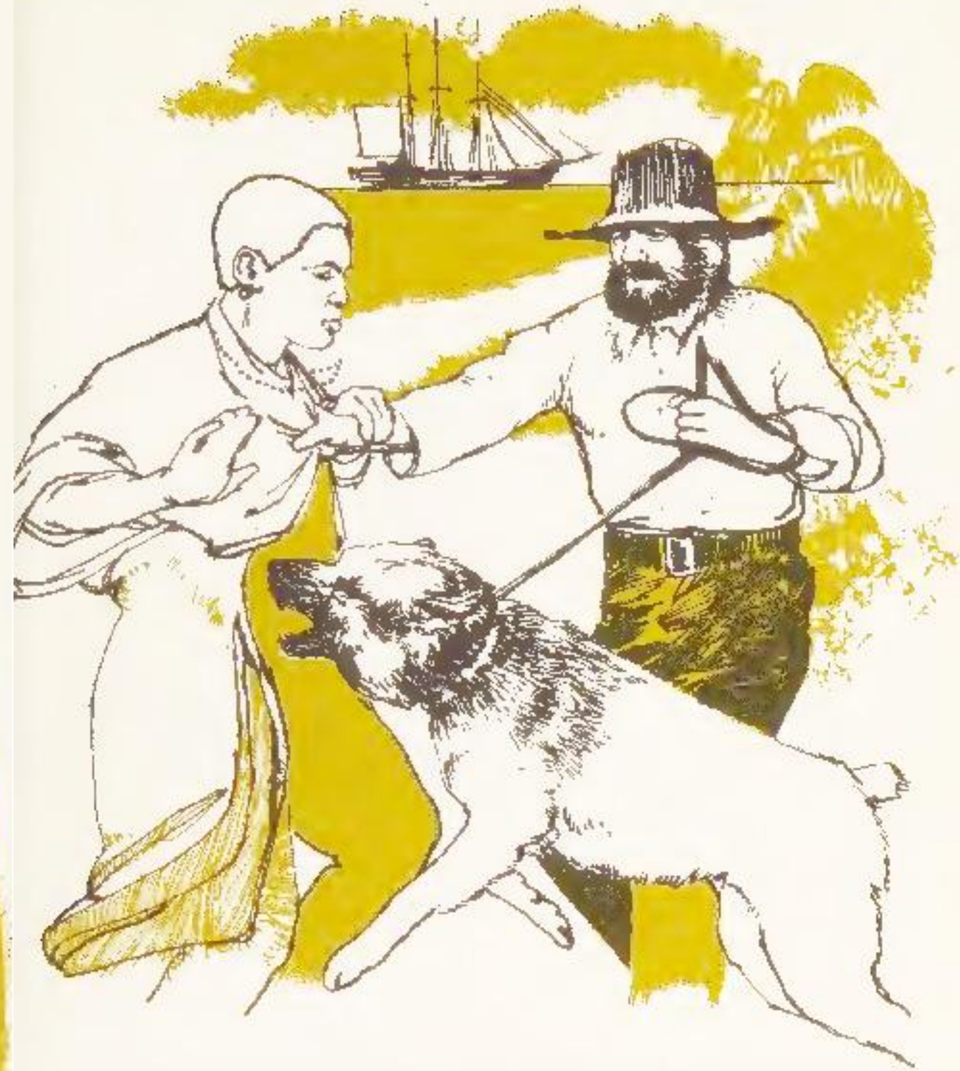
कभी-कभी फ्रेड पास में रहने वाले गोरे लड़कों के साथ खेलता था. वे स्कूल जाते थे और फ्रेड को पढ़ने में मदद करते थे.

गोरे लड़कों ने फ्रेड को एक स्पेलिंग बुक दी. वह जब भी मौका मिलता, उसे पढ़ता था.



जल्द ही फ्रेड एक अच्छा पाठक बन गया. जब वह तेरह साल का था, तो उसने जूते पॉलिश करके कुछ पैसे कमाए. उसने वह पैसे एक किताब पर खर्च किए. उसमें कई अध्याय गुलामी के खिलाफ थे.

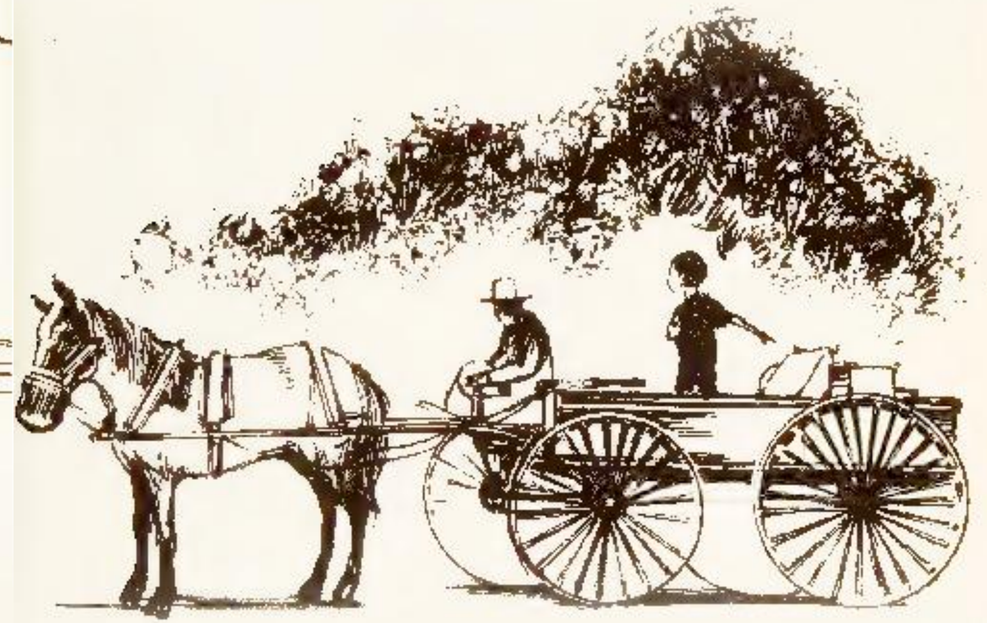




"गुलाम मालिक तो बस लुटेरों का एक गिरोह हैं," फ्रेड ने किताब पढ़ने के बाद खुद से कहा. "वे मेरे लोगों को चुराने के लिए अफ्रीका गए थे."



जब फ्रेड को दास-उन्मूलनवादियों के बारे में पता चला तो वह बहुत खुश हुआ. अब उसमें उम्मीद जगी थी कि एक दिन सभी गुलाम आज़ाद हो जाएँगे.

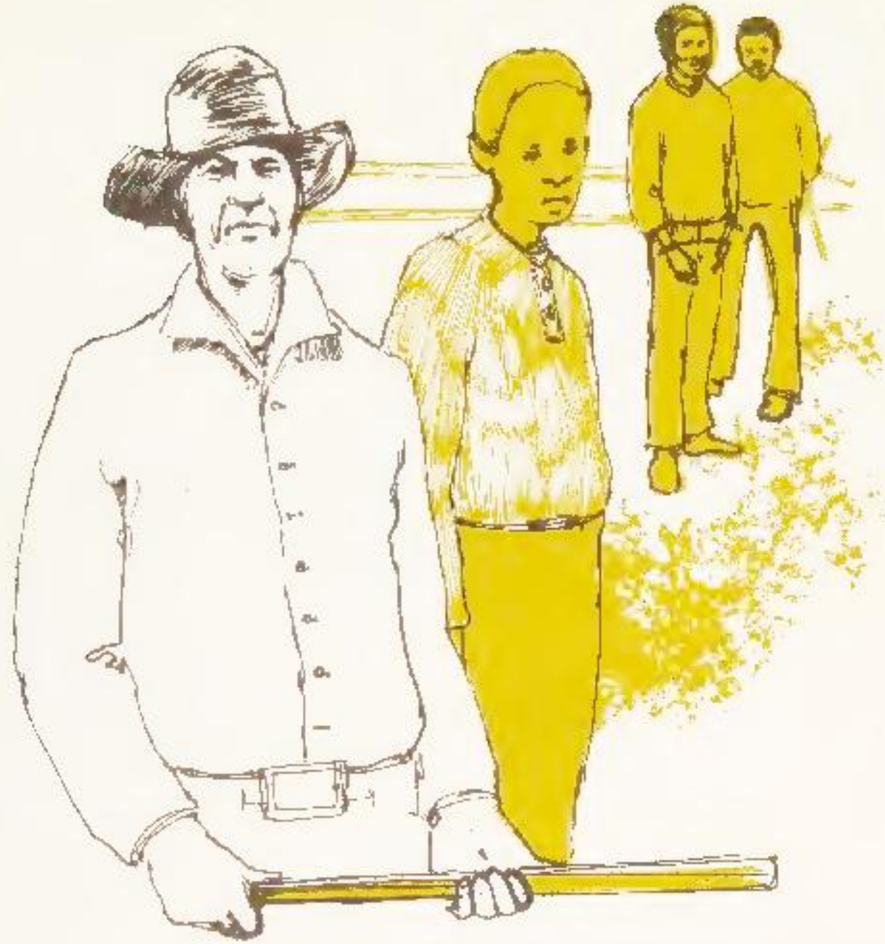


कभी-कभी फ्रेड ने मिस्टर और मिसेज़ औल्ड को दास-उन्मूलनवादियों के बारे में गुस्से से बात करते सुना. फ्रेड को इस शब्द का मतलब नहीं पता था. उसने अखबार में पढ़ा था कि दास-उन्मूलनवादी वे लोग होते हैं जो गुलामों को आज़ाद कराना चाहते हैं.

जब फ्रेड आज़ादी का सपना देख रहा था, तभी उसे एक बुरी खबर मिली. बूढ़े मास्टर की मृत्यु हो गई थी. अब ह्यू औल्ड का भाई थॉमस, फ्रेड का मालिक बन गया था. उसने फ्रेड को मैरीलैंड के उस हिस्से में वापस भेज दिया जहाँ वह पैदा हुआ था.

थॉमस औल्ड एक मतलबी आदमी था. जब उसने फ्रेड को दूसरे गुलामों को पढ़ना सिखाते हुए देखा तो वह बहुत गुस्सा हुआ. उसे लगा कि फ्रेड बहुत घमंडी है.





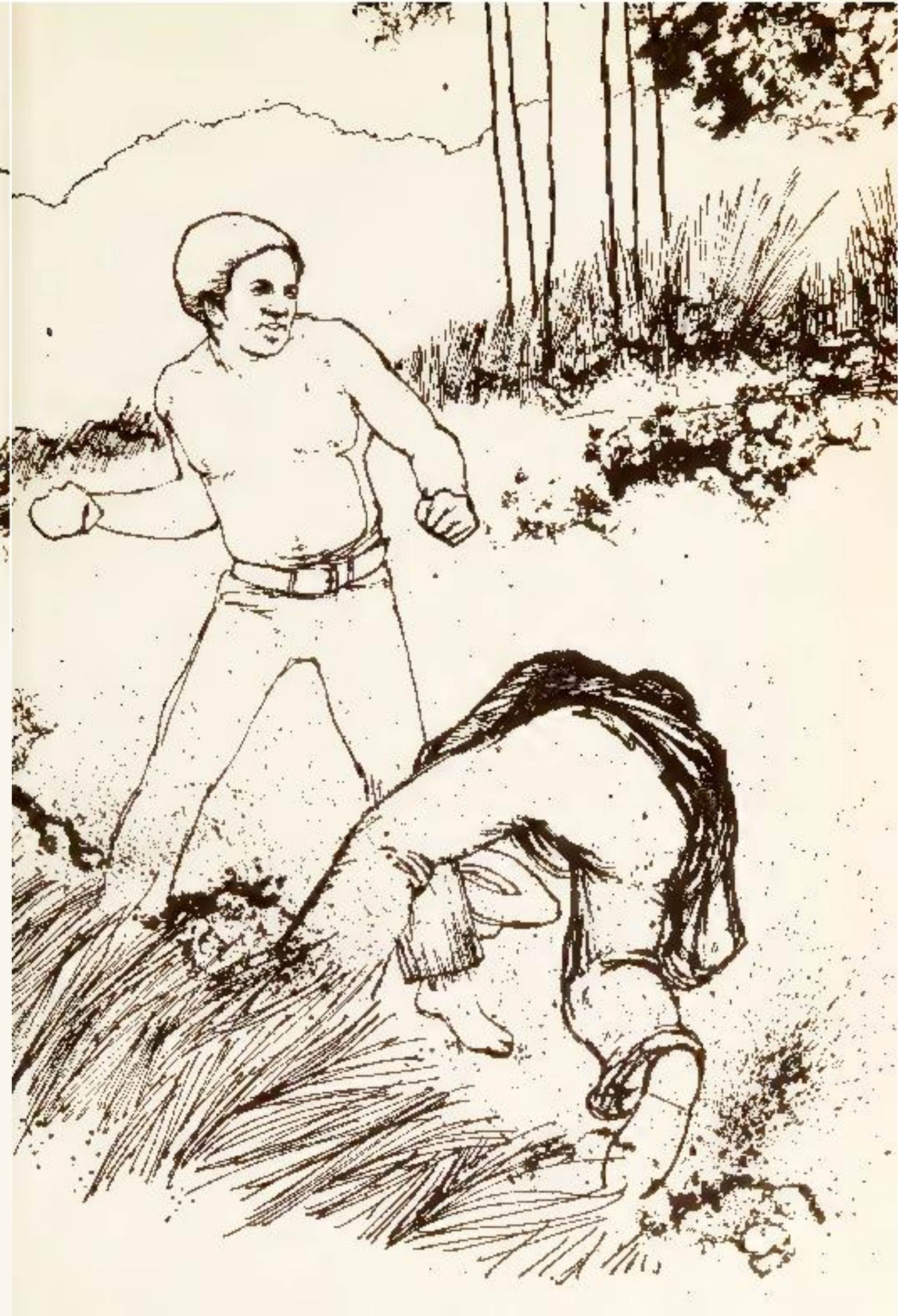
थॉमस औल्ड ने फ्रेड को कोवी नाम के एक आदमी के यहाँ काम करने के लिए भेजा. कोवी गुलाम तोड़ने वाले के रूप में जाना जाता था. उसने फ्रेड जैसे आज़ादी-प्रेमी गुलामों का मनोबल तोड़ने की कोशिश की.



कोवी ने फ्रेड को कई बार कोड़े मारे. एक दिन फ्रेड ने मन बना लिया कि अब वह कोवी को उसे और नहीं पीटने देगा.

एक दिन कोवी ने फ्रेड को रस्सी से बाँधने की कोशिश की ताकि वह उसे फिर से कोड़े मार सके. फ्रेड ने कोवी को पकड़कर ज़मीन पर पटक दिया.

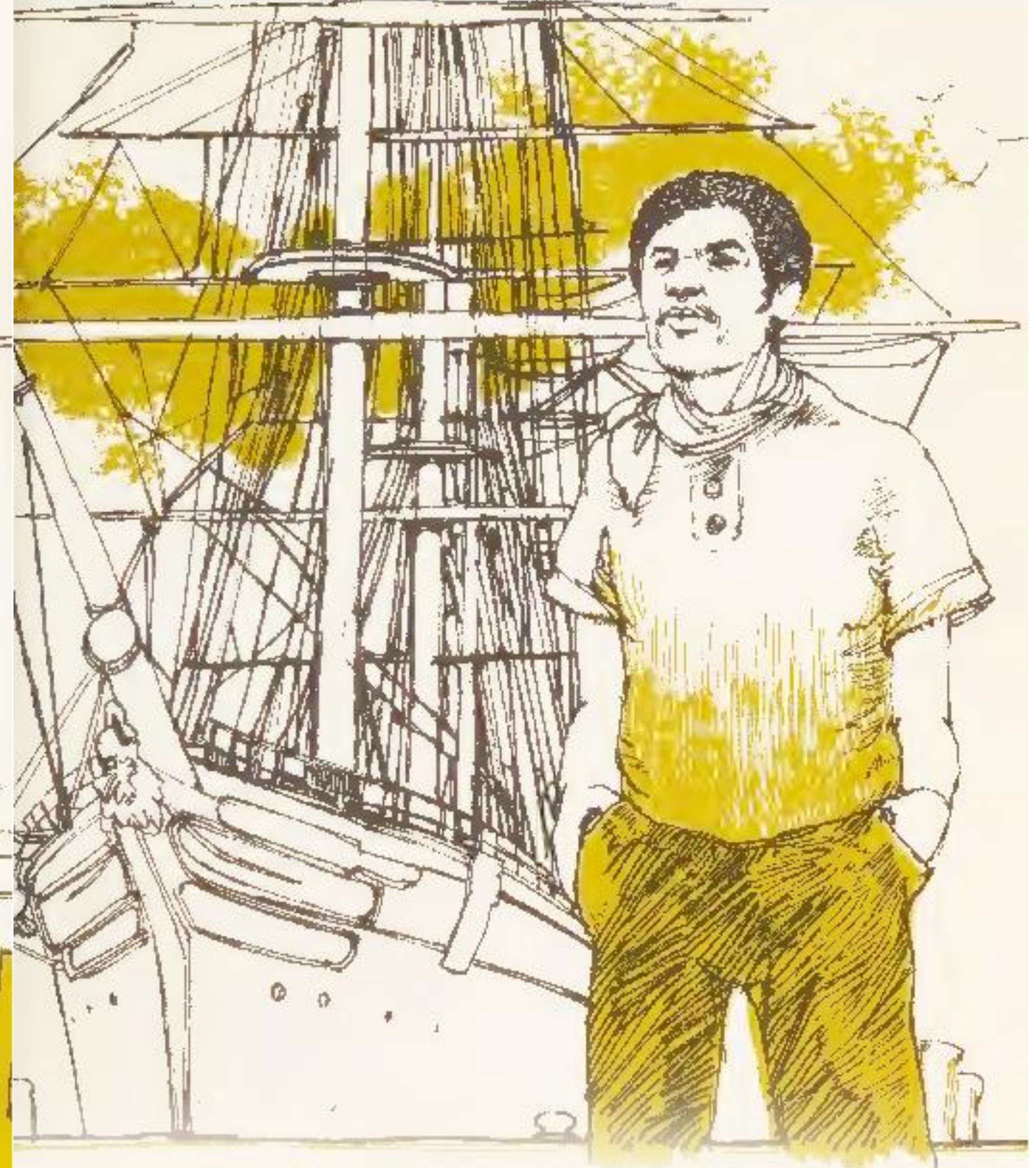
फ्रेड और कोवी दो घंटे से ज़्यादा समय तक लड़ते रहे. फिर कोवी ने हार मान ली. वह फ्रेड का हौसला कभी नहीं तोड़ सका.



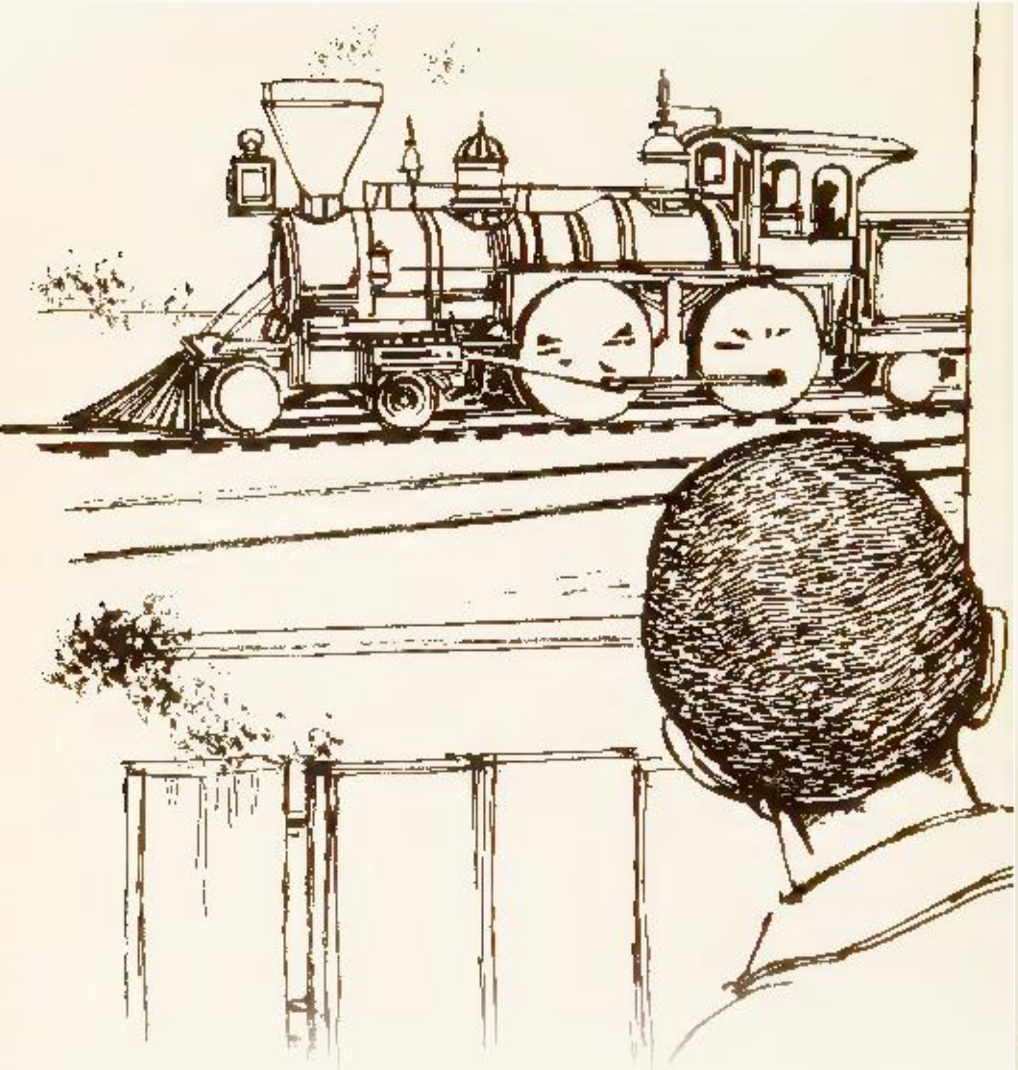
तीन साल देहात में रहने के बाद थॉमस औल्ड ने फ्रेड को बाल्टीमोर वापस भेज दिया. वह चाहता था कि फ्रेड कोई नया काम सीखे. फिर उसका मालिक उसे दूसरे लोगों के यहाँ काम पर रख सकता था.

फ्रेड बाल्टीमोर वापस आकर खुश था. यह उत्तर के और करीब था और आज़ादी के और भी करीब था.



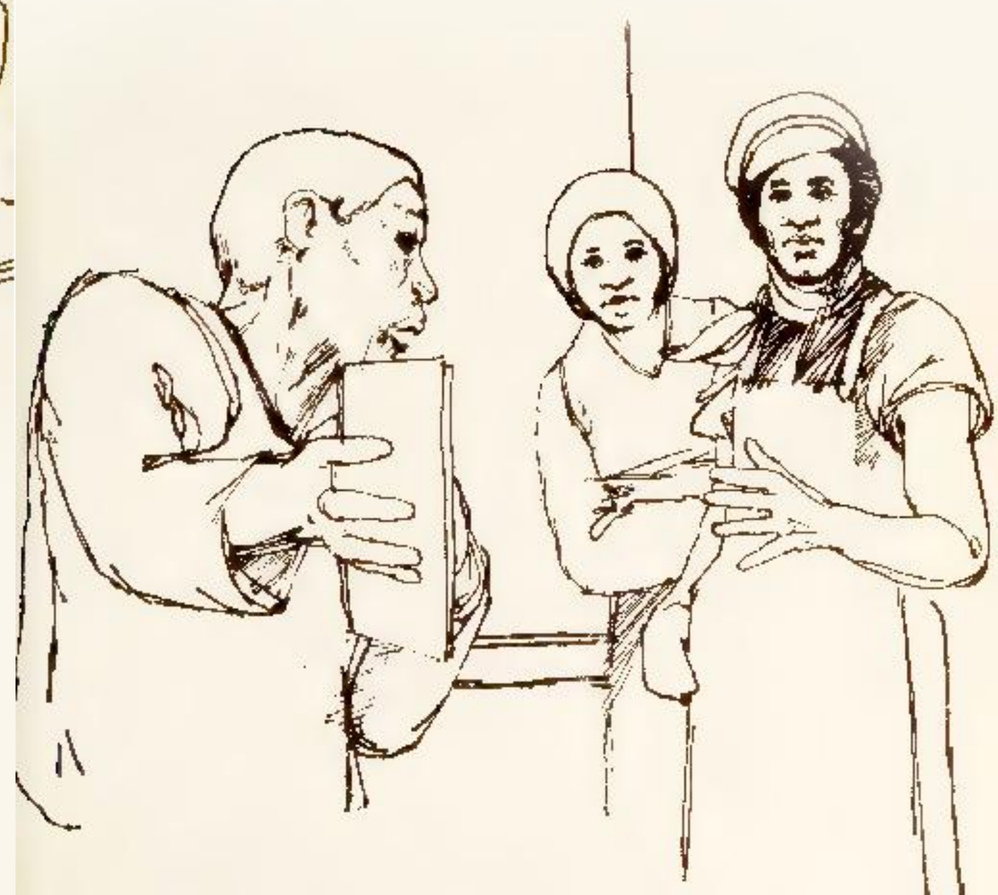


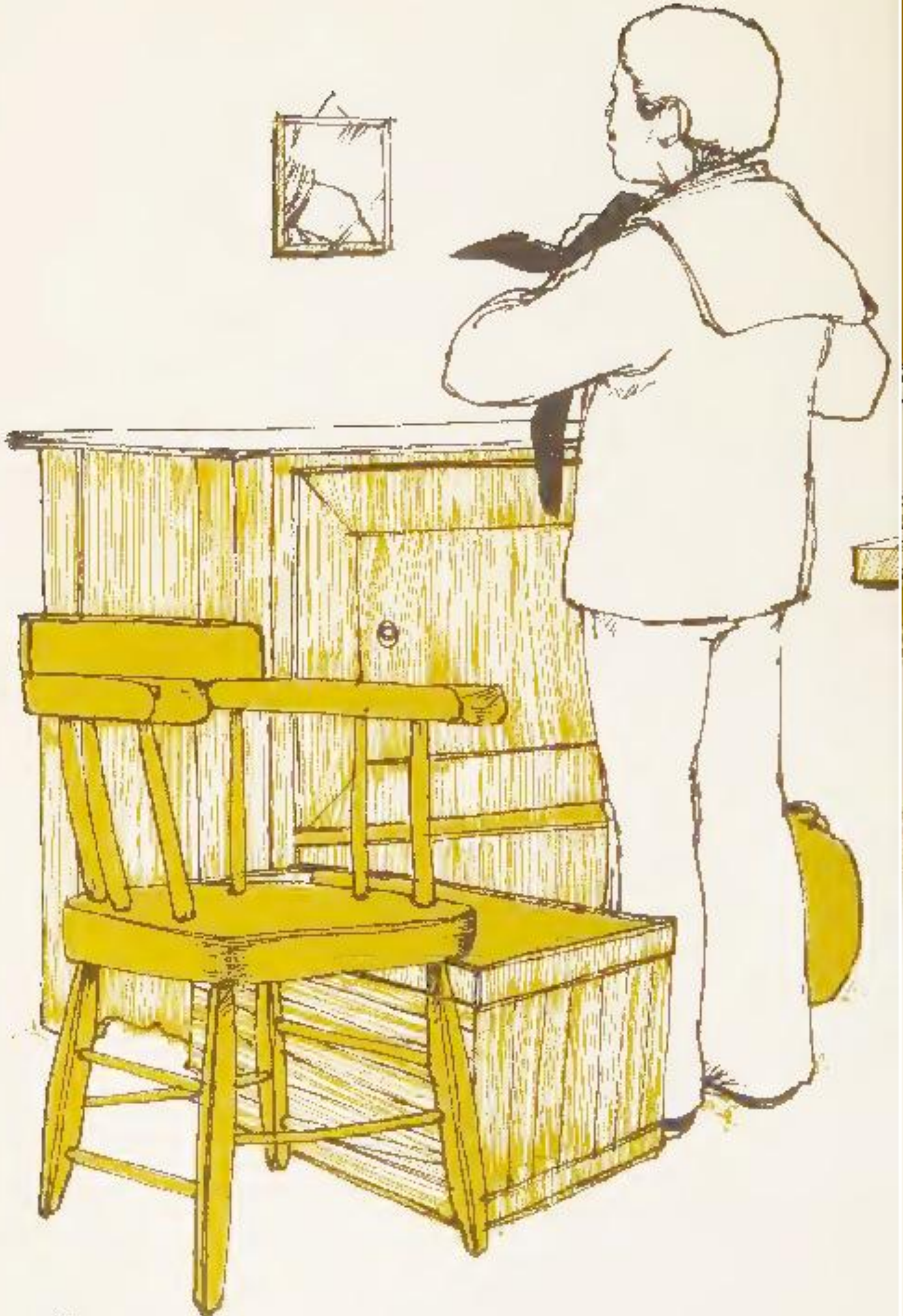
फ्रेड एक शिपयार्ड में काम करने चला गया. वो जो भी पैसा कमाता था, उसे वह अपने मालिक को देता था. अब फ्रेड अपने भागने की योजना बनाने लगा.



उत्तर की ओर जाने वाली ट्रेन में सवार होने के लिए उसे एक ऐसे दस्तावेज़ की ज़रूरत थी जिस पर लिखा हो कि वह आज़ाद था. अगर उसके पास वह कागज़ नहीं होते, तो उसे उसके मालिक के पास वापस भेज दिया जाता.

फ्रेड ने कई आज़ाद नीग्रो पुरुषों और महिलाओं से दोस्ती की. वे फ्रेड को अपने कागज़ उधार देने को तैयार थे. लेकिन उनके कागज़ों पर उनके चेहरे अंकित थे. उनमें से कोई भी फ्रेड जैसा नहीं दिखता था. उसकी सबसे अच्छी दोस्त एना मरे नाम की एक आज़ाद औरत थी. वह किसी औरत के कागज़ों का इस्तेमाल तो बिल्कुल भी नहीं कर सकता था.







फ्रेड के एक दोस्त के पास एक नाविक के दस्तावेज़ थे जिस पर वह यात्रा कर सकता था. उसने फ्रेड को उसका इस्तेमाल करने को कहा.

1838 की एक सुबह, फ्रेड ने नाविक की तरह कपड़े पहने. उसने लाल कमीज़ और एक बड़ी काली टाई पहनी थी.





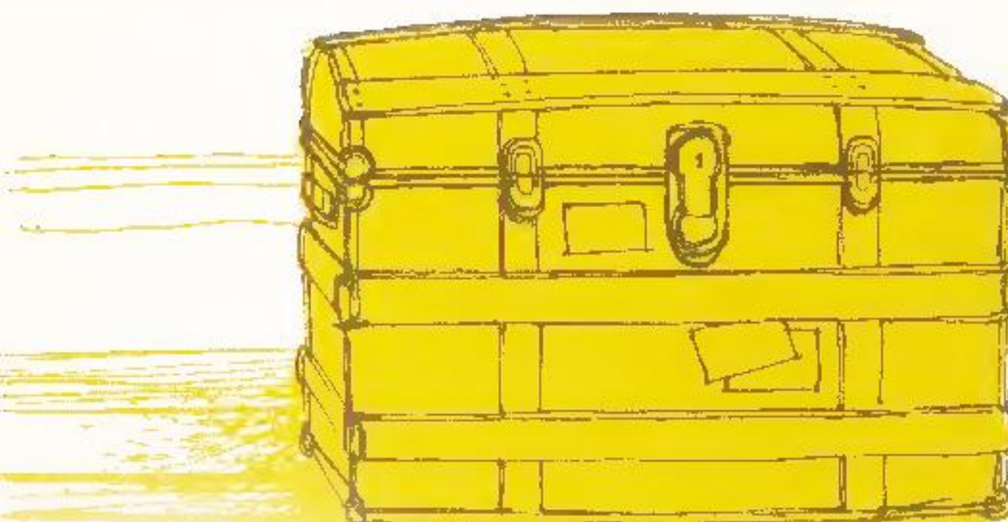
फिर फ्रेड स्टेशन पर गया, और वह उत्तर की ओर जाने वाली ट्रेन में चढ़ गया. जब कंडक्टर उसके पास रुका, तो उसकी धड़कनें तेज़ हो गईं. क्या वह नाविक का पास लेकर भाग सकता था? या उसे फिर से गुलामी में डाल दिया जाएगा?

"मुझे लगता है तुम्हारे पास तुम्हारे मुफ़्त के कागज़ात हैं," कंडक्टर ने कहा.

फ्रेड ने उसे नाविक का पास दिखाया. सौभाग्य से, कंडक्टर ने उसे ध्यान से नहीं देखा. उसने कागज़ फ्रेड को लौटा दिया और अपने रास्ते चला गया.

जब फ्रेड न्यूयॉर्क शहर में बसा, तो उसने अन्ना मरे को बुलवाया. उन दोनों ने शादी की. फिर वे न्यू बेडफ़ोर्ड, मैसाचुसेट्स गए और एक नीग्रो परिवार, जॉनसन के साथ रहने लगे. फ्रेड काफी सुरक्षित महसूस कर रहा था. लेकिन वह जानता था कि उत्तर में कुछ गुलाम-शिकारी भी थे.

उन्हें भगोड़ों गुलामों को उनके मालिकों के पास वापस भेजने के लिए पैसे मिलते थे. अगर फ्रेड बेली नाम का इस्तेमाल करता, तो गुलाम शिकारी उसे ढूँढ़ सकते थे.

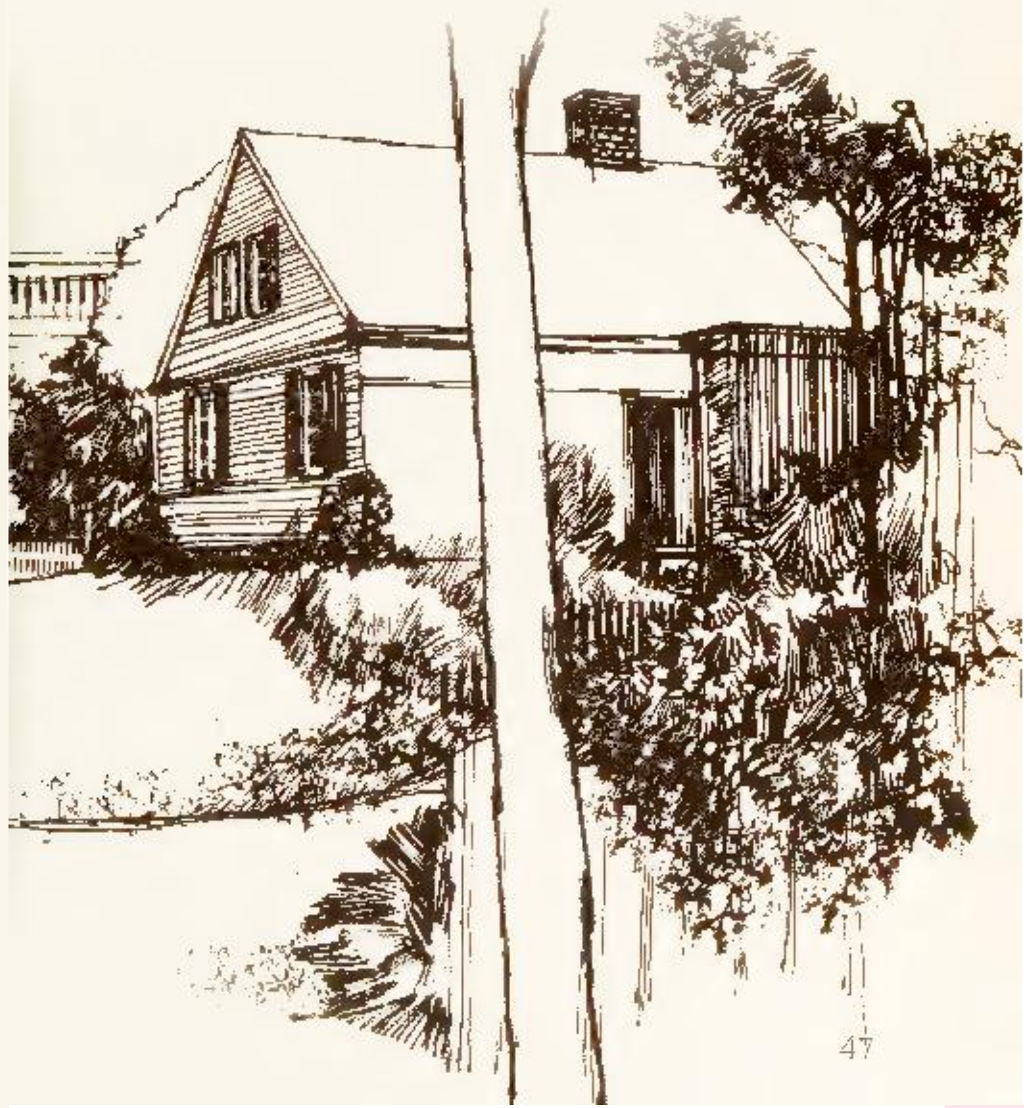




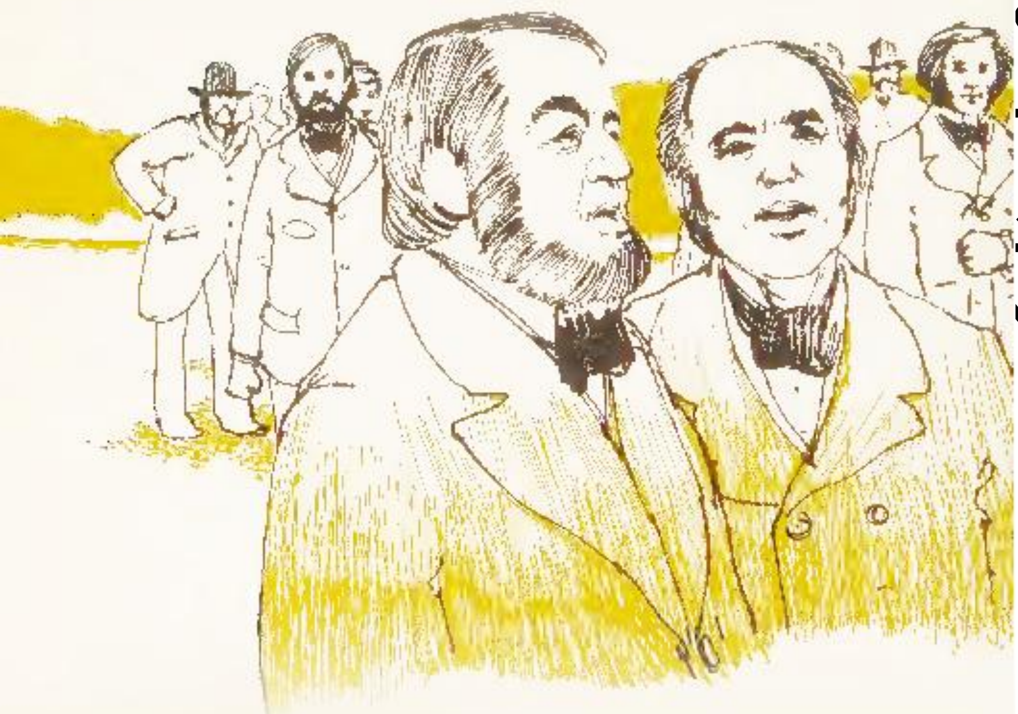


मिस्टर जॉनसन ने सुझाव दिया कि फ्रेड अपना उपनाम बदलकर डगलस रख ले. मिस्टर जॉनसन ने जो किताब पढ़ी थी, उसमें डगलस एक कुलीन व्यक्ति था. फिर फ्रेड को जीवन भर फ्रेडरिक डगलस के नाम से जाना गया.

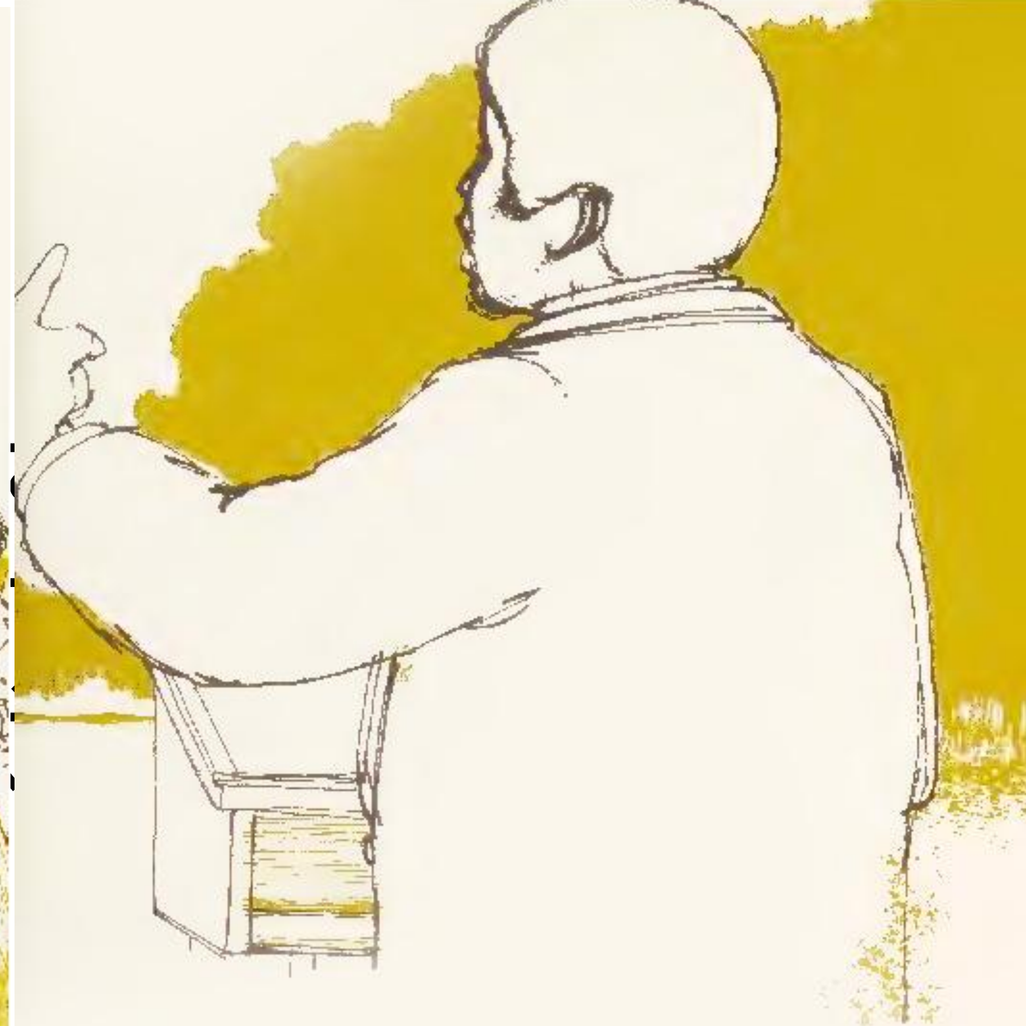
जल्द ही अन्ना और फ्रेडरिक का अपना घर हो गया. फ्रेडरिक एक मजदूर के रूप में अपनी जीविका कमाता था. अपनी कमाई को बचाए रखना उसे बहुत अच्छा लगा.



1841 में फ्रेडरिक एक गुलामी-विरोधी सभा में गया. उसे बोलने के लिए कहा गया. उसने एक गुलाम के रूप में अपने जीवन का वर्णन किया और बताया कि गुलामी कितनी भयानक थी.



सभा में मौजूद लोग उसके भाषण से उत्साहित हुए. उन्होंने उसे अन्य जगहों पर भी गुलामी-विरोधी भाषण देने के लिए कहा.



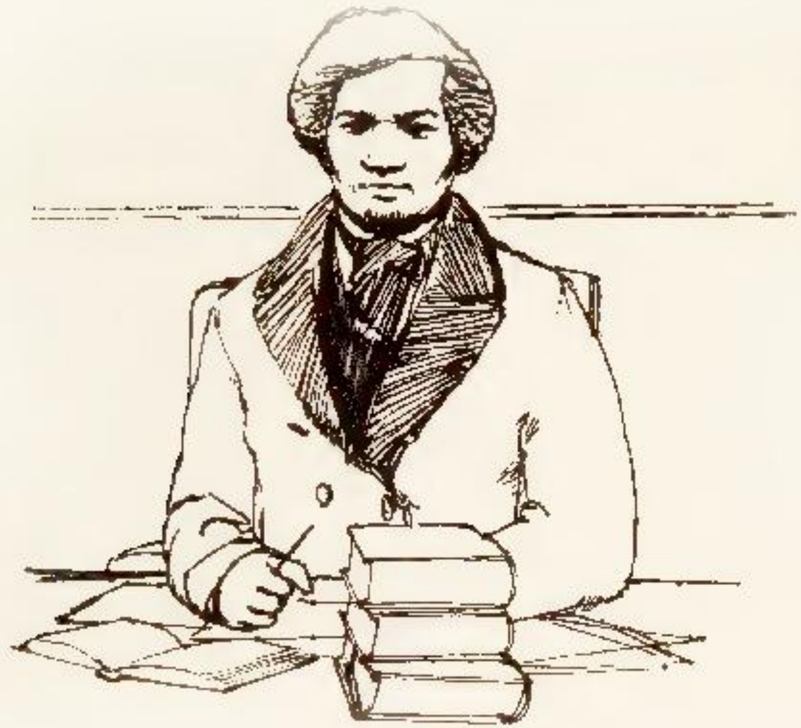
फ्रेडरिक जानता था कि यह खतरनाक हो सकता था. हो सकता है कि उसके मालिक को इन भाषणों के बारे में पता चल जाए और वह उसे ढूँढ़ ले. लेकिन अगर इन भाषणों से गुलामी खत्म करने में मदद मिल सकती है, तो वह जोखिम उठाने को तैयार था.



जल्द ही फ्रेडरिक एक बेहतरीन वक्ता बन गया. लोगों को उसपर शक होने लगा - कि वह वाकई गुलाम था, या नहीं. उन्होंने कहा कि वह न तो गुलामों की तरह बोलता था और न ही दिखता था.

"वह हमें यह नहीं बताता है, कि वह कहाँ से आया था, उसके मालिक का नाम क्या था, या वह कैसे भागकर आया है," उन्होंने कहा.

फ्रेडरिक ने गुलाम-शिकारियों से खुद को बचाने के लिए ये बातें गुप्त रखी थीं.



लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह गुलाम था, फ्रेडरिक ने अपने जीवन के बारे में एक किताब लिखी. इसमें उसने अपना असली नाम और अपने मालिक का नाम लिखा.

फ्रेडरिक की किताब मैरीलैंड में पढ़ी गई. अब उसे पकड़े जाने और अपने मालिक के पास वापस भेजे जाने का बड़ा खतरा था.



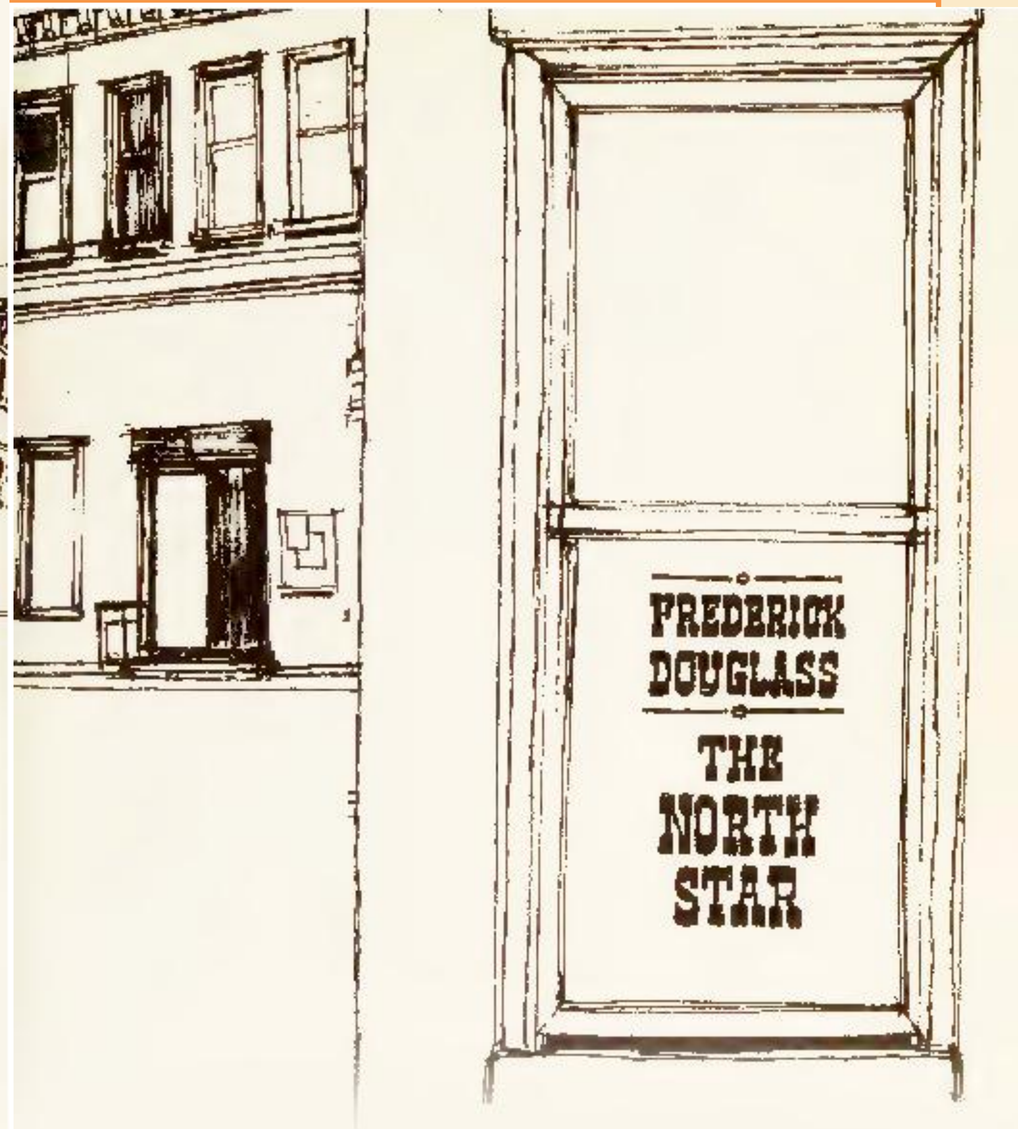
उसके दोस्तों ने उसे इंग्लैंड जाने के लिए कहा. वहाँ वह गुलामों के शिकारियों की पहुँच से बाहर हो जाएगा.

अंग्रेज लोग फ्रेडरिक डगलस की प्रशंसा करने लगे. उन्होंने उसके मालिक से उसकी आज़ादी खरीदने के लिए पर्याप्त धन जुटाया. अब फ्रेडरिक अमेरिका लौट सकता था. वह सभी गुलामों को आज़ाद कराने के अपने काम में लग सकता था.





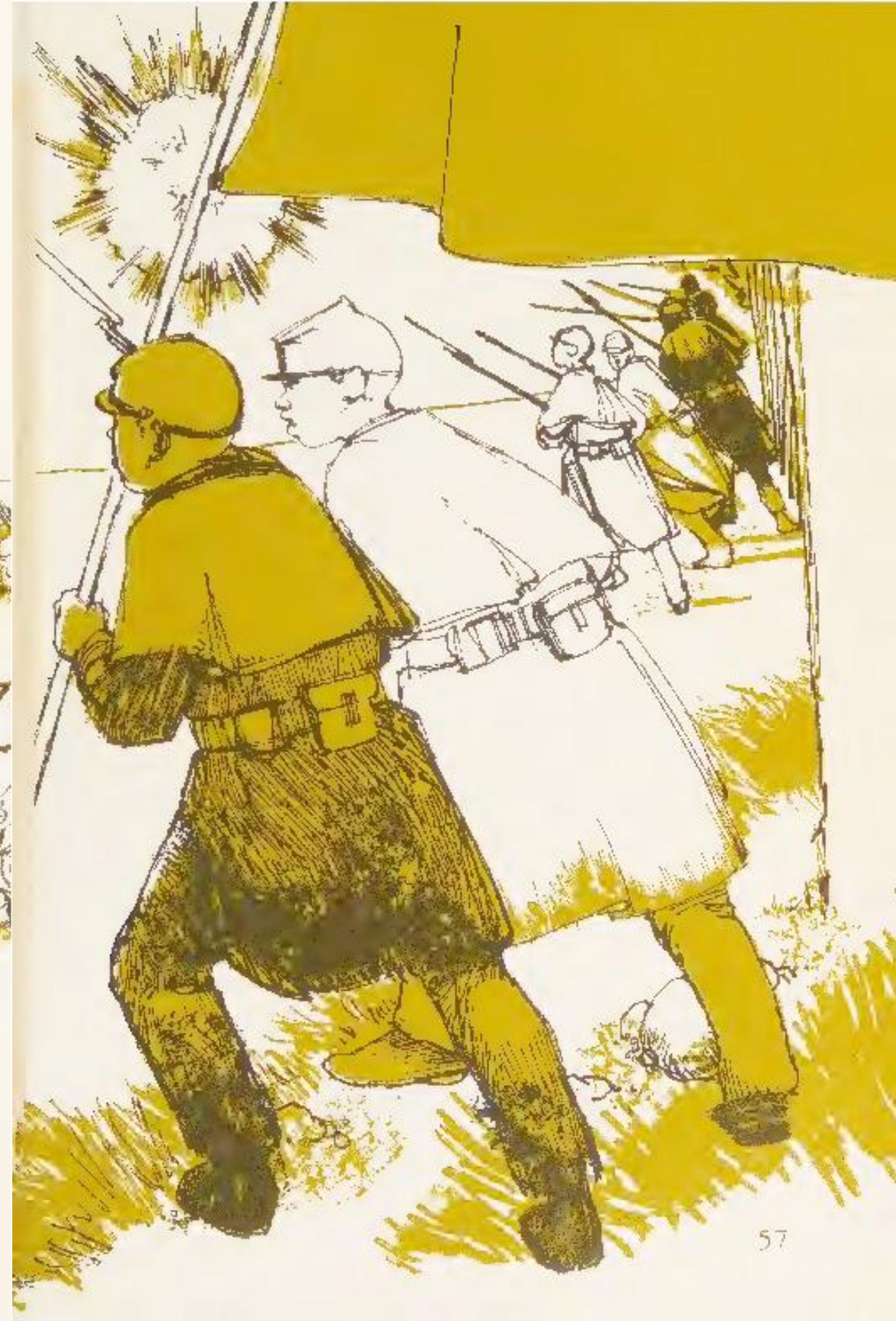
फ्रेडरिक रोचेस्टर, न्यूयॉर्क गए और उन्होंने वहां एक गुलामी-विरोधी अखबार शुरू किया. रोचेस्टर में रहते हुए, उन्होंने कई भागे हुए गुलामों को कनाडा पहुँचने में मदद की.

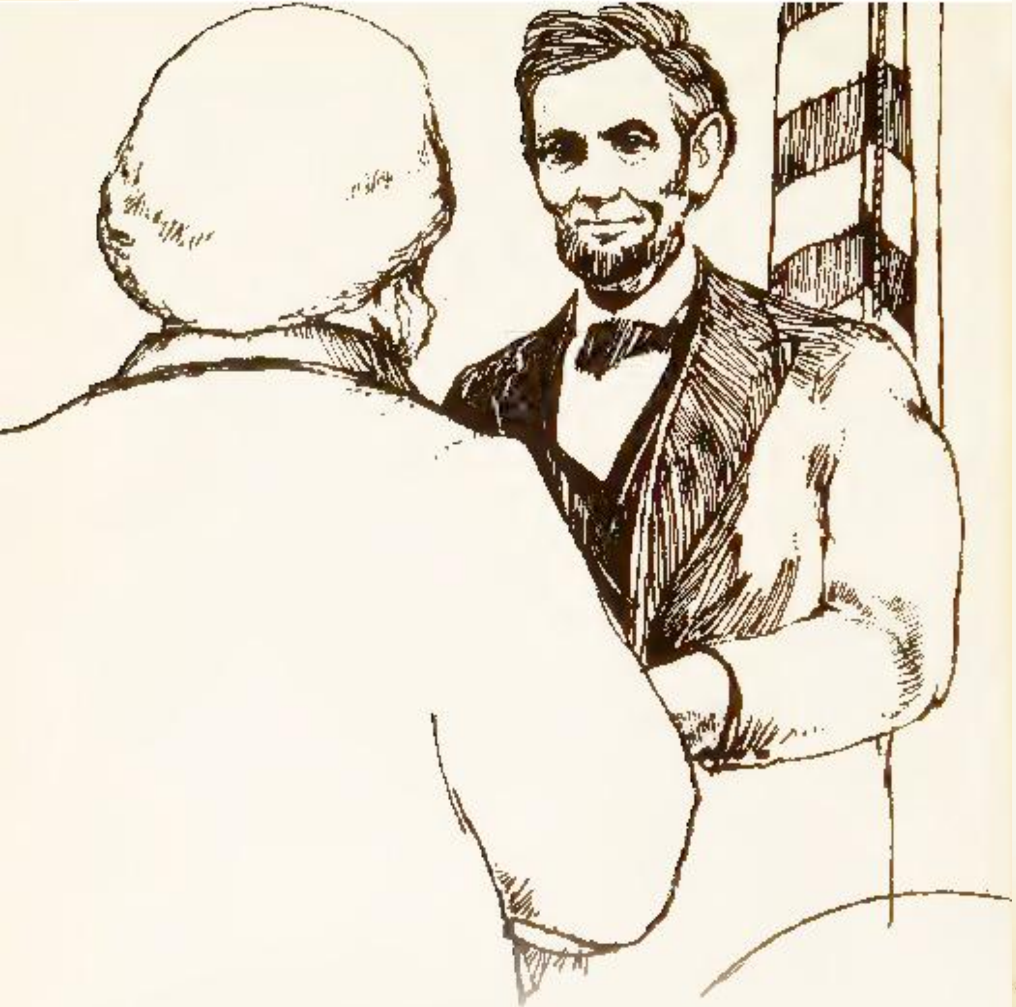


कनाडा, भागे हुए गुलामों को उनके मालिकों के पास वापस भेजने की इजाज़त नहीं देता था. फ्रेडरिक के परिवार ने भी भागे हुए गुलामों की मदद की. अब उनके कई बच्चे थे.

1860 के दशक में उत्तर और दक्षिण के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया. फ्रेडरिक को यकीन था कि युद्ध का अंत गुलामों की आज़ादी में होगा. उन्होंने सरकार से उत्तरी सेना में आज़ाद नीग्रो लोगों को लड़ने की अनुमति दिलवाई. युद्ध में जाने वाले पहले लोगों में उनके दो बेटे थे.





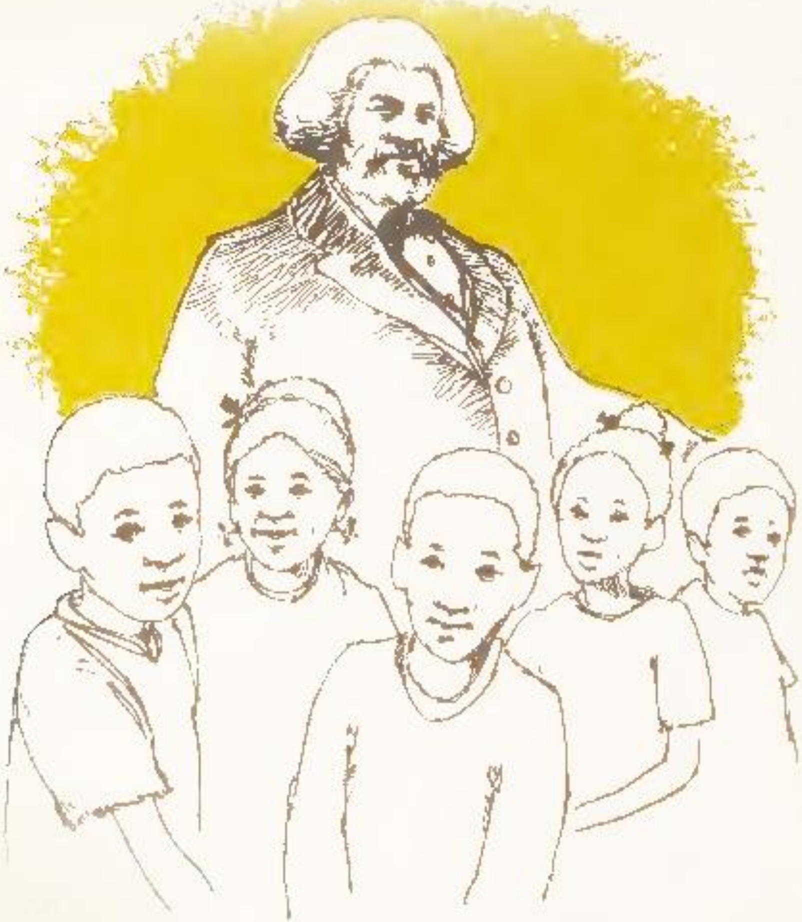


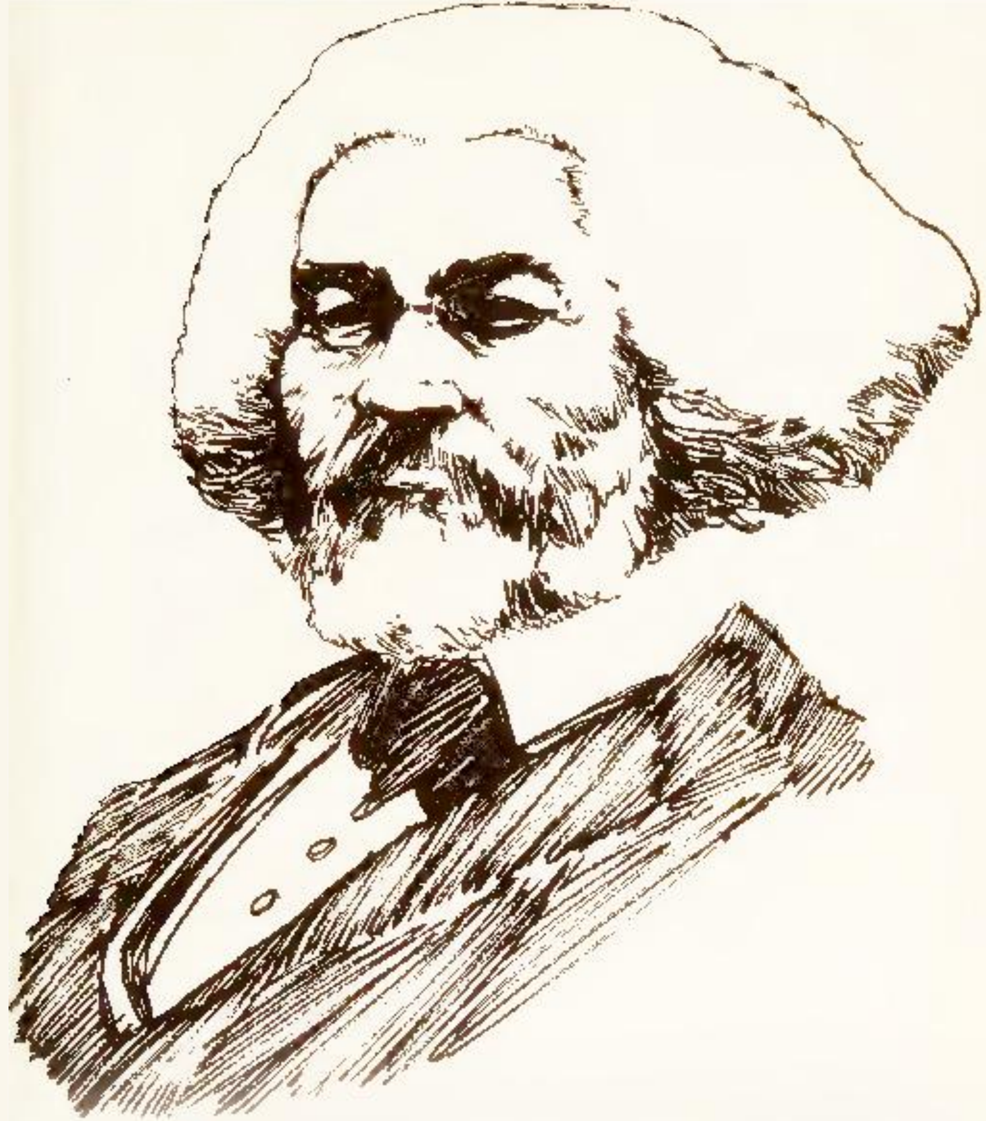
युद्ध के दौरान फ्रेडरिक राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से नीग्रो सैनिकों के बारे में बात करने व्हाइट हाउस गए. वह और राष्ट्रपति अच्छे दोस्त बन गए.

युद्ध उत्तर की जीत के साथ समाप्त हुआ और सभी गुलाम आज़ाद हो गए. फ्रेडरिक अपने जीवन में किसी भी चीज़ को लेकर इतना खुश कभी नहीं हुआ था.



उसे अभी भी काफी काम करना था. उन्होंने अपना शेष जीवन दूसरों की मदद करने में बिताया. उन्होंने पूर्व दासों की स्वतंत्रता के आशीर्वाद का आनंद लेने में मदद की. और उन्होंने कई महत्वपूर्ण सरकारी पदों पर कार्य किया.





फ्रेडरिक डगलस का 1895 में निधन हो गया. उनके द्वारा किए गए महान कार्यों ने सभी अमेरिकियों को स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने में मदद की.